॥ श्रीः ॥

अथर्वणवेदोक्त

श्रीविश्वम्भरो-पनिषत्।

श्रीरामतत्त्व प्रकाशिका टीका सहित

श्रीरामोपासकों के सर्वस्व।

॥ जिसको ॥

श्रीअयोध्यावासी पं० श्रीसरयूदासजी ने

सर्व सज्जनों के मनोरंजनार्थ भाषानुवाद करके

मैनेजर-महेशप्रसाद द्वारा-
सत्यनाम प्रिंटिंग वर्क्स, दुलानाला, बनारस
सिटी में मुद्रित कराकर प्रकाशित किया।

पुस्तक मिलने का पता—
सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द बुकसेलर
श्रीअयोध्या।

मूल्य ।)   प्रथमावृत्ति १०००)

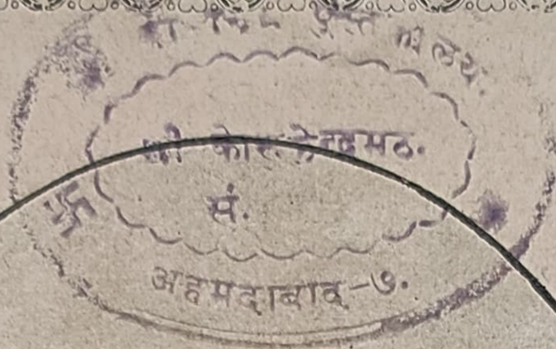
श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

श्रीमतेरामानन्दाय नमः ॥



तदस्त्रं तस्यवीरस्य स्वर्ग मार्ग प्रभावनम् ।
रामवाणासनक्षिप्त मावहत्परमां गतिम् ॥

श्रीवाल्मीकीय रामायणे किष्किन्धा काण्डे १७ सर्गः श्रीरामभद्रके धनुष्य से छूटे हुए उस बाण ने उस बीर बालिको परमगति (श्रीसाकेत लोक) को प्राप्त कराया वह वाण स्वर्ग (दिव्य धाम साकेत वासान्तानिक) मार्गका प्रकाशक है, वह श्रीरामनामसे अंकित है (रामनामांकितैः शरैः) उससे मुमुक्षुओं को मोक्ष प्रद है ।



पण्डित श्री सरयूदास-वैष्णवधर्म प्ररोचक, वीर वैष्णव।

श्रीसीतारामाभ्यां नमः

श्रीमते रामानन्दाय नमः

अथ श्रीविश्वम्भरउपनिषत्

भाषा टीका प्रारम्भः ।

मंगलाचरणम् ।

रक्ताम्भोज दलाक्षि राम नयनं पीताम्बरालं कृतं
श्यामांगं द्विभुजं प्रसन्न वदनं श्रीसीतया शोभितम्॥
कारुण्यामृत सागरं प्रियगणैर्भ्रात्रादि भिर्भावितम्।
वन्दे विष्णु शिवादि सेव्य मनिशं भक्तेष्ट सिद्धिप्रदम्
वात्सल्यादि गुणैः पूर्णां शृङ्गारादि रसाश्रयाम् ।
लक्ष्म्यादि सेवितां वन्दे मैथिलीं राघवप्रियाम् ॥
रामानन्द महं वन्दे वेद वेदांग पारगम् ।
राम मंत्र प्रदातारं सर्व्व लोको पकारकम् ॥

मूल—अथ हैनं शांडिल्यो महाशंभु पप्रच्छ यतो

भूमिका ।

गत फाल्गुन सम्बत् १९७९ में श्री चित्रकूट गया था । वहाँ श्री जानकी कुण्ड पर कुछ दिन ठहरा था । वहाँ एक सुयोग्य संत के दर्शन हुए। आपका शुभ नाम श्री परमहंस कल्याणदास जी हैं। आप विद्वान् भी हैं । आपके पास प्राचीन लेख "विश्वम्भरोपनिषद" की दो प्रतियाँ मिलीं । इस अलभ्य ग्रन्थ को पाकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ और दोनों प्रतियों को मिलाकर एक शुद्ध प्रति अपने लिए लिख लिया । यहाँ आने पर कतिपय अवध वासी सन्तों से इसकी चर्चा की । सब ने अनुरोध किया कि इसकी हिन्दी में अनुवाद करके सटीक छपवा दीजिए । अस्तु, सन्तों की आज्ञा शिरोधार्य्य करके मैं इस पुण्य कार्य्य में तत्पर हुआ और भगवत्कृपा से आज यह कार्य्य सम्पन्न हुआ । मैं विद्वान् नहीं हूं । तिस पर साहस करके यह तुच्छ सेवा की है। इसमें त्रुटि होना स्वाभाविक ही है। उसे सज्जन वृन्द कृपा पूर्वक क्षमा करेंगे ॥

पापमोचनघाट
अयोध्याजी
श्रावणकृष्ण ५ सं० १९८०

विनीत—
सब सज्जनों का दास
श्री वैष्णव सरयूदास

वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सहेत्युक्तंब्रह्म किमस्ति कोवा सर्वेश्वराधि पतिः निर्गुणसगुणाभ्यां परः कोवा मूर्त्तामूर्त्ताभ्यांपरः कार्त्ताकारयिताच की दृशइति । अथ कैर्मन्त्रैः संसाराद्विमुच्यजीवः सद्यो मुक्तो भवति कोवा मन्त्राणामधिकारं समन्वेतीति ।

अर्थ—बहुत से प्रश्नोत्तर करते हुए तदनन्तर शाण्डिल्य ऋषिने महाशंभुसे पूछा कि वाणीरूप वेदमन द्वारा जिस ब्रह्म को प्राप्त न होकर जिससे लौट आते हैं भाव प्रत्यक्ष वर्णन नहीं कर सकते हैं वह ब्रह्म क्या है ? और सर्वेश्वराधि पति अर्थात् सर्वेश्वर ब्रह्मा, विष्णु और शिव इनके पति निर्गुण सगुण दोनों से परे कौन हैं सब के कर्त्ता सब से कार्य्य करानेवाले किस प्रकार के हैं यह और तिसके पश्चात् यह भी कहिए कि किन मन्त्रों से जीव संसार से छूट कर शीघ्र मुक्त होता है और उन मन्त्रों के अधिकार किन का है ।

मूल—सहोवाच महाशम्भुः यत्पृष्ट वांस्तस्यचनाम रूपं लीलाऽथ धामानितु चिन्मयानि मनोवचो गोचराण्येवं तानि स्वयं कृपातः स्फुरणं प्रयान्ति अतो रूप मनामेति प्रोक्तोयं राघवः स्वराट्तन प्रकाश भूतंच यस्य ब्रह्म सनातनम् ।

अर्थ-शाण्डिल्यऋषि का प्रश्न सुनकर महाशम्भु निश्चय करके बोले कि जो आपने पूछा उस परमात्मा के नाम, रूप, लीला और धाम सब सच्चिदानन्द स्वरूप मन वचन से परे हैं वे सब उन्हीं के कृपा से स्वयं प्रकाशित होते हैं इससे मन वचन से परे हैं इसीसे उन स्वयं ब्रह्म श्रीराघव को अनाम वेद शास्त्र में कहा है भाव नाम, रूप, सब है नहीं तो "यस्य नाम महद्यशः" इत्यादि वेद क्यों कहते इससे जहां परमात्माको अरूप, अनाम वेद शास्त्र में कहा है तहाँ प्राकृत नाम रूप से रहित अर्थ करना चाहिये नहीं तो पूर्वा पर विरोध परेगा। फिर कहते हैं कि उन्ही के शरीर के प्रकाश सोई सनातन ब्रह्म हैं ऐसे ही "सदा शिवसंहिता" में श्रीशेषजी ने वेदों से कहा है यथाः-राघवस्य गुणो दिव्यो महाविष्णु स्वरूपवान्। वासुदेवो घनी भूतस्तनुते जो महाशिवः॥

सईश्वराणां परमोमहेश्वरः पतिः पतीनां परमंच दैवतम् अमूर्त्त मूर्त्तादि शरीर कोसौ कर्त्ताप्य कर्त्ताच न प्रसंयुक्तः। व्याप्नोतिसर्व्वं निज तेज सायः अणोरणीयान्महतः परस्तात् मूर्त्तेण सर्व्वं निर्माय विश्वं स्वयंतु लीलां वितनोति नित्याम् द्वयोः शरीरयोरैक्य मतोद्वैतं बुधा जगुः। नःसमाभ्यधिकत्वाद्वा तमै द्वैतं व भाषिरे।

अर्थ—वह श्रीराम ईश्वरों के परम ईश्वर हैं पतियों के पति हैं और देवताओं के परम देवता हैं ऐसे ही श्रीमद्भा-

ल्मीकीय रामायण के अयोध्या काण्ड सर्ग ४४ में कहा है यथा:—सूर्य्यस्यापि भवेत्सूर्य्यो ह्यग्ने रग्नि: प्रभो: प्रभु: श्रिया: श्रीश्च भवेदग्र्या कीर्त्या: कीर्ति: क्षमाक्षमा । दैवतं देवता नांच भूतानां भूत सत्तम: । अर्थात् सूर्य्य का भी सूर्य्य अग्नि की अग्नि प्रभु यानी ईश्वरों के ईश्वर श्रियों की मुख्य श्री कीर्तियों की कीर्ति क्षमा की क्षमा देवताओं के देवता और सर्व भूतों के भी भूत अर्थात् अन्तर्य्यामी श्रीराम जी हैं इत्यादि कहा है सो विस्तार से आगे कहेंगे । फिर वह रामजी कैसे हैं कि, अमूर्त्त निर्गुण ब्रह्म मूर्त्त सगुण ब्रह्म दोनों के शरीर हैं और कर्ता भी हैं अकर्ता भी हैं तथा दोनों से भिन्न भी हैं ऐसेही श्रीराम तापनीयोपनिषद् में नारायण, वासुदेवादि को श्रीराम जीका अंग वर्णन किया है सो भी आगे कहेंगे । फिर वह राम जी कैसे हैं कि अपने तेज से सब में व्याप्त हैं और छोटे से अति छोटे बड़े से अति बड़े हैं तथा सब से परे हैं । सगुण रूप श्री महानारायण से सब सन्सार को निर्माण किया है और स्वयं श्रीराम रूप से श्री साकेत में नित्य दिव्य लीला को विस्तार करते हैं । सगुण निर्गुण दोनों शरीर से एक हैं इससे पण्डित लोग श्रीरामजी को अद्वैत ब्रह्म कहते हैं अथवा " न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते " अर्थात् उस परमात्मा के समान ही कोई नहीं है तो अधिक कहाँ से देख परेगा इससे भी उनको अद्वैत ब्रह्म कहते हैं ।

मूल—सर्वावतार लीलांच करोति सगुणोय: अयोध्यायां स्वयं रामो रासमेव करोति स: सगुण निर्गुणाभ्यां परस्य परमपुरुषस्य दाशरथे-

मंत्रस्य नाद विन्दु वांमनसो रगोचरौ तस्यमंत्रा-श्चानन्तास्तेषु षट्शतं वरीयां सस्तेषु च त्रयो मन्त्रा अतिश्रेष्ठाः।

अर्थ-जो सगुण ब्रह्म श्रीमन्नारायण २४ अवतार धारण करके लीला करते हैं और स्वयं श्रीरामजी श्रीअयोध्याजी में केवल रासलीला ही करते हैं वह सगुण निर्गुण ब्रह्म से परे परम पुरुष श्री दाशरथी राम उसका मंत्र नादविन्दु अर्थात् रेफविन्दु दोनों अक्षर मन बचन से परे है उनके अनंत मंत्र हैं उनमें छ सौ मंत्र श्रेष्ठ हैं उनमें भी तीन मंत्र अत्यन्त श्रेष्ठ हैं सो आगे के मंत्र से दिखाते हैं।

मूल-षडक्षरो द्वयाख्यं मन्त्र रत्नं युग्म मन्त्रश्चेति विन्दु पूर्व्वको दीर्घाग्निस्ततः केवलं दीर्घाग्निः ततो मायेति अथ नम इति प्रथम श्रीमदिति ततोरामचन्द्र चरणा विति ब्रूयादनं-तरं शरणमिति पदं पश्चात्प्रपद्ये इति वदेत् पुनश्च श्रीमते इति अथ रामचन्द्रयेति तदग्रे नम इति यो दाशरथेर्द्वयाख्यं मन्त्राणां प्रवरं मन्त्र रत्नम-धीते स सर्व्वान् कामानश्नुते तेन सह मोदते इति अथ प्रणवादनन्तरं न द्वितीयाक्षरम स्तृतीया

क्षरं सी चतुर्थाक्षरं ता पंच माक्षरं र षष्ठाक्षरं म सप्तमाक्षरं भ्यामष्टमाक्षर मिति इममष्टाक्षरं विद्वान् मुक्तो भवति एतन्मंत्र त्रयं सर्व्व मंत्र वरं जप्त्वा सद्यो मुच्यते कर्म बन्धनात् यः श्रीरामेऽति भक्तिमान् स एवैतन्मंत्राधिकारीति ।

अर्थ–षडक्षर १ मंत्रों में रत्न मंत्र द्वय २ और युगल मंत्र ३ यह तीन मन्त्र हैं। अब मन्त्रोद्धार दिखाते हैं। विन्दु पूर्व्वक दीर्घ अग्नि बीज रकार (रां) उसके बाद केवल दीर्घ अग्नि बीज र कार (रा) उसके पीछे (माय) फिर नमः ऐसा सब मिलाकर रां रामाय नमः यह षडक्षर राम मन्त्र हुआ। अब मन्त्र द्वय दिखाते हैं प्रथम श्रीमद् उसके पीछे रामचन्द्र चरणौ ऐसा कहना उसके पीछे शरण यह पद कहै पीछे प्रपद्ये ऐसा कहै फिर श्रीमते कह कर रामचन्द्राय कहै उसके आगे नमः कहै सब मिला कर " श्रीमद्रामचन्द्र चरणौ शरणं प्रपद्ये श्रीमते रामचन्द्राय नमः " यह २५ अक्षर वाला मंत्र द्वय, सब मन्त्रों में अति श्रेष्ठ मन्त्र रत्न है इसे जो प्राणी जपता है वह सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त होकर श्रीरामजी के साथ आनन्द को प्राप्त होता है। अब युगल मन्त्र के स्वरूप दिखाते हैं ॐ कार के पीछे न दूसरा अक्षर म तीसरा अक्षर सी चौथा अक्षर ता पञ्चमाक्षर रा छठवाँ अक्षर मा सप्तमाक्षर भ्यां अष्टमाक्षर हुआ सब मिलाकर " ॐ नमः सीतारामाभ्यां " यह अष्टाक्षर युगल मन्त्र का जाननेवाला मुक्त होता है इन तीनों श्रेष्ठ मन्त्रों को जप कर जीव कर्म्म बंधन से

शीघ्र मुक्त हो जाता है। जिनको श्रीरामजी में अति भक्ति है वही इन तीनों मन्त्र के अधिकारी हैं।

मूल–श्रीराम एव सर्व्वं करणं तस्य रूप द्वयं परिछिन्न मपरिछिन्नं परिछिन्न स्वरूपेण साकेत प्रमदावने तिष्ठन् रास मेव करोति द्वितीयं स्वरूपं जगदुपत्यादेः कारणं तद्दक्षिणांगात्क्षीराब्धि शायी वामांगाद्रमा वैकुण्ठवासीति हृदयात्पर नारायणो वभूव चरणाभ्यां वदरिकोपवन स्थायी शृङ्गारान्नन्दनन्दन इति।

श्रीराम ही सब के कारण रूप हैं उन श्रीरामजी के दो स्वरूप हैं एक परिछिन्न रूप दूसरा अपरिछिन्न रूप, परिछिन्नरूप से श्रीरामजी साकेत लोक में स्त्रियों के समूह में रह कर केवल रासलीला करते हैं, द्वितीय अपरिछिन्न स्वरूप सन्सार की उत्पत्ति का कारण है उनके दहिने अंग से क्षीर समुद्र वासी अष्ट भुजी भूमा पुरुष हुए हैं वामांग से रमा वैकुण्ठ बासी हुए हैं हृदय से पर नारायण अर्थात् बिरजा नदी के पार जो नारायण रहते हैं सो हुए हैं (जिनकी उपासना श्रीरामानुजीय वैष्णव करते हैं)। चरणों से बद्रीवन निवासी नर नारायण हुए हैं शृङ्गारसे नन्दनन्दन श्रीकृष्णजी हुए हैं। ऐसा ही शिवसंहिता के पंचम पटल में कहा है। यथा–द्विभुजो जानकी जानिः सदा

सर्व्वत्र शोभते । भक्तेच्छातो भवेदेष वैकुण्ठे तु चतुर्भुजः ॥ कल्पितं चापरं रूपं नित्यं द्विभुज मेवतत् । परमं रस सम्पन्नं ध्येयं योग विदाम्बरैः ॥ अर्थात् श्रीजानकी जीवन श्रीरामजी सर्व्वदा द्विभुज स्वरूप से शोभा देते हैं केवल भक्त की इच्छा से वैकुण्ठ में चतुर्भुज हुए हैं क्योंकि "उपासकानां कार्य्यार्थं ब्रह्मणो रूप कल्पना," इस श्रुति के कथनानुसार भगवत् के जितने रूप हैं सब कल्पित रूप हैं अनादि नित्य स्वरूप द्विभुज ही हैं जो स्वरूप परम रस आनन्द स्वरूप योगियों करके ध्यान करने योग्य हैं ऐसही नारद पंच रात्र के अनन्त संहिता में भी कहा है यथा-परन्नारायणाच्चैव कृष्णात्पर तरादपि । योवै परतमः श्रीमान् रामो दाशरथिः स्वराट् ॥ अर्थात् श्रीमन्नारायण से और पर गोलोकवासी श्रीकृष्ण से भी दाशरथी श्रीरामनिश्चय करके परे हैं और सर्व तंत्र स्वतंत्र हैं ऐसा ही वेद सारोपनिषत् के प्रथम खंड में कहा है । यथा-यस्यांशे नैव ब्रह्माविष्णु महेश्वरा अपि जाता महाविष्णुर्यस्य दिव्य गुणाश्च स एव कार्य्य कारणयोः परः परम पुरुषो रामो दाशरथिर्बभूव । अर्थात् जिसके अंशही करके ब्रह्मा, विष्णु, शिव उत्पन्न हुए हैं और महाविष्णु भी जिसके दिव्य गुणों से हैं वही कार्य्य कारण दोनों से परे परमपुरुष श्रीराम दाशरथी राम हुए इस श्रुतिसे भी श्रीरामजी अनादि ब्रह्म सिद्ध होते हैं ।

एवं सर्वेऽवताराः श्रीराम चन्द्र चरण रेखाभ्यः समुद्भवन्ति तथाऽनंत कोटि विष्णवश्च चतुर्व्यूहश्च समुद्भवन्ति एवमपराजितेश्वर मपरिमिताः परनारायणादयः अष्टभुजा नारायणाद-

यश्चानंत कोटि संख्यकाः बद्धांजलि पुटाः सर्व कालं समुपासते यदाविष्वादीन् यदाऽज्ञापयति तदा तद् ब्रह्माण्डे सर्व कार्य्यं कुर्व्वन्ति ते सर्वे देवाद्विविधाः भिन्नांशा अभिन्नांशाश्च श्रीरघुवर मुभये सेवन्ते भिन्नांशा ब्रह्मादयः अभिन्नांशा नाराणादयः।

अर्थ—इस प्रकार से सब अवतार श्रीरामचन्द्र के चरण रेखों से उत्पन्न होते हैं तथा अनन्त कोटि विष्णु और चतुर्व्यूह अर्थात् अनिरुद्ध प्रद्युम्न, सङ्कर्षण, और बासुदेव ए सब उत्पन्न होते हैं ऐसे अपराजितेश्वर यानी अयोध्याधिपति श्रीरामजी का अमित प्रभाव है जिनके सामने अनन्त कोटि पर नारायण, अष्टभुजी नारायण भूमा पुरुष हाथ जोड़े खड़े रहते हैं और सब काल उपासना करते हैं। जब असंख्य कोटि ब्रह्मा विष्णु शिवादि को आज्ञा मिलती है तब वे सब कोटि २ ब्रह्माण्ड के उत्पत्ति, पालन, संहारादि सब काम करते हैं। वे ब्रह्मा, विष्णु, शिवादिक देवता सब दो प्रकार के हैं एक भिन्नांश हैं और एक अभिन्नांश हैं वे सब श्रीरघुनाथ जी की सेवा करते हैं भिन्नांश ब्रह्मा, शिव, इन्द्रादिक देवता हैं और अभिन्नांश नारायण, विष्णु इत्यादि अवतार हैं। यहाँ पर भिन्नांश का तात्पर्य्य यह है कि जैसे शरीर में नख लोमादिक हैं कटने से भिन्न हो जाते हैं उसी प्रकार से ब्रह्मा शिवादिक देवता ईश्वर के अंश हैं परन्तु ईश्वर से

भिन्न हैं इसी से ब्रह्मा शिवादिक देवता माया के वश हो जाते हैं क्योंकि ब्रह्मादिक देवता नित्य ज्ञानी नहीं हैं और विष्णु, नारायण इत्यादि अवतार अभिन्नांश हैं । भाव सब श्रीरामजी के अंश ह उसी से अभिन्न हैं जैसे शरीर में सब अंग भिन्न हैं परन्तु सब एकही हैं इसी प्रकार से विष्णु नारायणादि को जानना चाहिये अभिन्नांश होने की दो पहिचान है एक तो भृगुजी ने जब से विष्णु भगवान् को चरण प्रहार किया है तब से सब स्वरूपों में भृगुलता की चिन्ह देख पड़ती है । दूसरा जलन्धर की स्त्री वृन्दा ने जब विष्णु भगवान् को शाप दिया कि आप बड़े कठोर हैं इससे पाषाण हो जावें । तब से भगवान् के श्रीराम कृष्णादि सब अवतार तथा सब स्वरूप शालग्राम के स्वरूप हो गये अभिन्नांश न होते तो एकही स्वरूप में भृगुलता की चिन्ह और शालग्राम का होना माना जाता । इससे यह देखाया कि कोई स्वरूप का निरादर करने से सब स्वरूपों का निरादर हो जाना है । इस लिए उपासकों को विचार पूर्वक उपासना करनी चाहिये रूपान्तरों को श्रीरामजी से भिन्न मानना ठीक नहीं । भगवत् के अनंत रूप ह सबही नित्य ज्ञानस्वरूप हैं और दिव्यऐश्वर्य करके सम्पन्न हैं ।यथा बाराह पुराणे। सर्वे नित्याः शाश्वताश्च देहास्तस्य परात्मनः।परमानन्द सन्दोहा ज्ञान मात्राश्चसर्व्वतः॥सर्वेसर्व गुणैः पूर्णाः सर्व दोष विवर्जिताः।अर्थात्

उस परमात्मा के सब शरीर सर्वदा से नित्य हैं समूह परमानन्दके स्थान सब प्रकार से ज्ञान रूप हैं सब समस्त गुणों करके पूर्ण और सर्व दोष करके रहित हैं इत्यादि कहा है इसी से भगवत् के विष्णु नारायणादिरूपों में तथा अवतारादिकों मे माया, मोह अज्ञानादि नहीं होता है और न कहीं किसी ग्रन्थ में लिखा है। केवल "दीपादुत्पन्न दीपवत्" अर्थात् जैसे एक दीपक से अनेक दीपक होने पर भी किसी दीपक में प्रकाशादि गुण कम नहीं है, तथापि प्रथमका दीपक अनादि है। बस इसी प्रकार से एक परमात्मा होकर भी कार्य्यार्थ अनेक रूप धारण करते हैं सब रूप सर्व शक्तिमान् हैं केवल प्रथम रूप को अनादि मानना पड़ता है, सो अनादि ब्रह्म श्रीराम हैं दूसरा नहीं। यथा श्रीगोस्वामीजी का सिद्धान्त। सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवध पति सोई॥ ऐस ही अगस्त्य संहिता में भी लिखा है यथा-यथाद्यादि प्रदीपेन सर्व दीप प्रबोधनम्। तथा सर्व्वाऽवताराणा मवतारी रघूत्तमः॥ अर्थात् जैसे आदि दीपक से सब दीपक का प्रबोध (ज्ञान) हो जाता है वैसे ही सब अवतारों के आदि कारण श्रीरामरूप का बोध होने से सब अवतारों का यथार्थ बोध हो जाता है। कहने का तात्पर्य्य यही है कि जब तक अनादि ब्रह्म श्रीरामजीके स्वरूप का ज्ञान नहीं होता है तब तक रूपान्तर का ज्ञाता अथवा उपासक समझा जाता है तत्ववेत्ता नहीं हो

सकता है। जैसा यहां पर वेद में लिखा है कि श्रीरामजीके सामने सहस्रों विष्णु नारायणादि हाथ जोड़े खड़े हैं वैसे ही शिवसंहिता के पञ्चम पटल के द्वितीय अध्याय में भी लिखा सो आगे लिखेंगे देख लीजियेगा और चतुर्व्यूह तथा चौवीसो अवतार का कारण श्रीरामजी हैं सो नारद पंच रात्रके बृहद्ब्रह्म संहिता में लिखा है यथा-वासुदेवादि मूर्त्तीणां चतुर्णां कारणं परम्। चतुर्विंशति मूर्तीणा माश्रय; शरणांमम्॥ अर्थात् वासुदेव, संकर्षण प्रद्युम्न और अनिरुद्ध इन चतुर्व्यूहोंके परम कारण तथा २४ अवतारोंके कारण श्रीरामजी हमारे रक्षक हैं इत्यादि कहा है। और श्रीरामजी के चरणरेखासे सब अवतारों का होना लिखा है सो महा रामायण ५२ के सर्ग में शिवजी ने पार्वतीजी से ऐसा कहा है यथा।येऽवतारा विभो मुग्धे जायन्ते विश्व हेतवे। तेऽपिरामांघ्रि चिन्हेभ्यः संभवन्ति पुनः पुनः॥ अर्थात् शिवजी बोले कि हे मुग्धे सन्सार की रक्षा करने के लिये जो अवतार होते हैं वे भी श्रीराम जी के चरण चिन्ह से बार बार उत्पन्न होते हैं। इत्यादि विस्तार से एक सर्ग वर्णन किया है इसलिये महारामायण वेदानुकूल है। विश्वम्भर उपनिषत् में श्रीरामजी के शृङ्गार से श्रीकृष्ण जी का अवतार होना लिखा है सो सुदर्शन संहिता में लिखा है। यथाः-- मत्स्यश्चराम हृदयं योगरूपी जनार्दनः। नारसिंहो महा कोपो वामनः कटि मेखला॥ भार्गवो जंघयोर्जातो बलरामश्च पृष्ठतः। बौद्धश्च करुणा साक्षात्कल्किश्चित्तस्य हर्षतः कृष्णः शृङ्गार

रूपश्च वृन्दावन विभूषणः। एतेचांश कलासर्वे रामस्तु भगवा-न्स्वयम्। अर्थात् मत्स्यावतार श्रीरामजी के हृदय से योग रूप जनार्दन भगवान हैं और कूर्मावतार श्रीरामजी की आधार शक्ति है वाराह भगवान् दोनों भुजा के बल हैं नृसिंह रामजी के महाक्रोध हैं वामन जी कटिमेखला से हैं परशुरामजी दोनों जंघाओं से हुए हैं बलिरामजी रामजी के पीठ से हैं और वौद्ध भगवान् गया जी वाले रामजी के साक्षात् करुणा रूप हैं कल्कि भगवान् चित्त के हर्ष से हुए हैं और श्रीकृष्ण भगवान् रामजी के शृङ्गार से हुए हैं जो कि वृन्दावन के विभूषण हैं ए सब रामजी के अंशकला हैं रामजी स्वयं भगवान् हैं।

सहस्रं समाः जीवात्मनः पञ्चांगोपासनां कुर्वन्ति तत आनन्द रूपा भवन्ति ततः सदेव सौम्येद मग्र आसीदेक मेवा द्वितीयं स एक्षत वहुस्यां प्रजायेय पूर्वं पञ्चांगोपासकाः सृष्टि समये श्रीकृष्णोपासनां समनुष्ठाय गोलोकं प्राप्नुवन्ति तत्र केचित्तत्रैव तिष्ठन्ति केचिद्रामोपासनाऽधि-कारिणो भवन्तीति विष्णवाद्युत्तमदेहे प्रविष्टो

देवताऽभवत् मर्त्यादधम देहेषु स्थितो भजति देवताः

अर्थ-जीवात्मा सहस्त्रों वर्ष पर्य्यंत पञ्चांगोपासना अर्थात् सूर्य्य गणेश, शक्ति, शिव और विष्णु की उपासना करते हैं उससे आनन्द रूप होते हैं उनसे भी सब का कारण ब्रह्म जिनके स्वरूप को छान्दोग्य उपनिषद् के षष्ठ प्रपाठक के दो खण्ड में उद्दालक ऋषि ने अपने पुत्र श्वेतकेतु से कहा है कि हे सौम्य ! यह नाम, रूप क्रियात्मक जगत् जो तुम देखते सुनते हो सो यह जैसा पूर्व में एक अद्वितीय महा सूक्ष्म रूप सत्य ही था तैसाही वर्तमान काल में भी कार्यरूप सत्य ही है सो वह परमात्मा देखता हुआ अथवा इच्छा करता हुआ कि मैं बहुत रूप से होऊँ सोई पञ्च तत्त्वात्मक चिदचिद्विशिष्ट परमात्मा नाना रूप हुए उसी परमात्मा को पञ्चांग उपासना करके जीव प्राप्त होते हैं तहाँ। सृष्टि के समय ये पञ्च देव के उपासक क्रम से उपासना करते २ श्रीकृष्ण जी की उपासना करके गोलोक को प्राप्त होते हैं तहाँ कोई उपासक लोग तहीं पर रहते हैं कोई उपासक लोग श्री रामोपासना के अधिकारी होते हैं भाव कोई २ उपासक लोग गोलोक में भी जाकर के श्रीरामजी की उपासना करके सर्वोपरि श्री साकेत लोक को प्राप्त होते हैं ऐसा सिद्धांत है वही आत्मा नाम परमात्मा विष्णु इत्यादि उत्तम शरीर में प्रवेश होने से भजनीय देवता होते वही आत्मा मनुष्यादि शरीर में प्रवेश होने से देवताओं को भजता है।

मूल—परात्परस्य श्रीरामनाम्नः सर्वेषां नारायणादीनां नामानि भवन्ति तस्य धाम्नस्तेषां धामान्युत्पद्यन्ते तल्लीलातः सर्वेषां लीला प्रादुर्भवन्ति तत्स्वरूपात्सर्वेषां रूपाण्याविर्भवन्ति स एवायोध्याधिपतिः सर्व कारणानामादि कारणं न तस्मात्किंचित्परं तत्वमस्तीति।

अर्थ—परात्पर श्रीराम नाम से नारायणादिक सब नाम उत्पन्न होते हैं उनके धाम अयोध्या, साकेत से बैकुण्ठादि धाम उत्पन्न होते हैं उन दिव्य लीला से सर्वावतारों की लीला उत्पन्न होती हैं उन दिव्य द्विभुजात्मक श्रीरामजी से विष्णु, नारायणादि सब रूप होते हैं वही श्री अयोध्याधिपति श्रीराम सब कारणों के आदि कारण हैं उनसे परे तत्त्वकिंचित् भी नहीं है ऐसा वेद का कथन है। राम नाम से सब नाम का होना महा रामायण में भी लिखा है यथा सर्ग ५१ विष्णु नारायणः कृष्णो वासुदेवो हरिः स्मृतः। ब्रह्म विश्वम्भरोऽनन्तो विश्व रूप कला निधिः॥ कल्मषघ्नो दया मूर्तिः सर्वगः सर्वसेवितः। परमेश्वर नामानिसंत्यनेकानि पार्वति॥ एकादेक महास्वच्छं उच्चारान्मोदा दायकम्। नाम्ना मेवचसर्वेषां रामनाम प्रकाशकः॥ अर्थात् विष्णु, नारायण,

कृष्ण, वासुदेव, हरि, ब्रह्मविश्वम्भर, अनन्त, विश्वरूप, कलानिधि, कल्मषघ्न दया मूर्ति सर्वज्ञ सर्वसेवित परमेश्वर के अनेक नाम हैं सब एक से एक महानिर्मल उच्चारण मात्र से मोक्ष को देनेवाले हैं इन सब नामों के प्रकाशक रामनाम ही हैं। यह वचन शिवजी का पार्वतीजी से है। पुनः " केदार खण्डे " अन्यानियानि नामानि तानि सर्वाणि पार्वति। कार्य्यार्थे संभवा नीह राम नामाऽदितः प्रिये॥ महाशंभु संहितायां शिवउवाच पार्वती प्रति। वां मनो गोचरातीतः सत्यलोकेश ईश्वरः। तस्य नामादिकं सर्वं रामनाम्ना प्रकाशते॥ यस्य प्रसादाद्देवेशि ममसामर्थ्यमी दृशम्। संहरामि क्षणादेव त्रैलोक्यं सचराचरम्॥ धातासृजति भूतानि विष्णुर्वारयते जगत्। तथा इन्द्रादयः सर्वे रामनाम्नाभि वर्द्धिताः॥ पुनः पद्मपुराणे ब्रह्मोवाच नारदं प्रति। विष्णु नारायणादीनि नामानि चामितान्यपि। तानि सर्वाणि देवर्षे जातानि राम नामतः॥ पुनः शिव संहितायां पञ्चम पटले। नारायणादि नामानि कीर्तितानि बहून्यपि। सम्यग् भगवतस्तेषु राम नाम प्रकाशकम्॥ नित्यं ब्रह्म निराकार मैश्वर्य्यं वैविभाति च। उभयैश्वर्य्य साज्ञित्यो रामो दशरथात्मजः॥ साकेते नित्य माधूर्य्ये धाम्नि संराजते सदा। पुनः पद्मपुराणे क्रिया योग सारे। विष्णोर्नामानिविप्रेन्द्र सर्व्वे वेदाधिकानिबै। तेषां मध्येतु तत्वज्ञ रामनाम परं स्मृतम्॥ नारायणादि नामानि कीर्तितानि बहून्यपि। आत्मा तेषां च सर्वेषां रामनाम प्रकाशकम्॥ अर्थात् शिवजी बोले कि अन्य भगवत् के जितने नाम हैं वे

सब कार्यार्थ उत्पन्न हुए हैं श्रीरामनाम सब के आदि हैं उसी से सब नाम उत्पन्न हुए हैं। मन बचन से परे सत्य लोक के ईश्वर उनके संपूर्ण नाम रामनाम से प्रकाशित हैं। शिव जी कहते हैं कि देवेशि ! जिस रामनाम के प्रसाद से हमारी ऐसी शक्ति है कि क्षणमात्र में चराचरों के सहित तीनों लोक को संहार कर जाता हूँ। जिस रामनाम की कृपासे ब्रह्मा सृष्टि करते हैं विष्णु पालन करते हैं तथा इन्द्रादिक ३३ कोटि देवता रामनाम ही से अपने अपने सिद्धि को प्राप्त हुए हैं। पद्म पुराण में ब्रह्मा जी का बचन है कि विष्णु नारायणादिक अमित नाम हैं सो हे नारदजी ! वे सब रामनाम से उत्पन्न हुए हैं। पुनः शिव संहिता में शिवजी ने कहा है कि विष्णु नारायणादिक बहुत नाम कथन किये हैं वे संपूर्ण भगवत् के नाम राम नाम से प्रकाशित हैं। नारायणादिक नाम साकार ऐश्वर्य्य युक्त हैं निर्गुण ब्रह्म नित्य निर्गुण ऐश्वर्य्य संपन्न हैं और श्री दशरथात्मज राम सगुण निर्गुण दोनों ऐश्वर्य्य करके सम्पन्न हैं जो कि सर्वोपरि श्री साकेत लोक में विराजते हैं। क्रिया योग सारमें शिवजीने कहा है कि हे विप्रेन्द्र ! विष्णु के नामों को सबवेदों में अधिक वर्णन किया है उन सब नामों के मध्य में तत्वज्ञ रामनाम कहा है। नारायणादिक बहुत नाम कहे हैं उन सब नामों का प्रकाशक आत्मा राम नाम हैं इसी प्रकार से बहुत कहा है। और श्री रामनाम का माहात्म्य वेद में भी लिखा है। यथा नतस्य प्रतिमाऽस्ति यस्यनाम महद्यशः।

अर्थात् जिस ब्रह्म के नाम का महान् यश है: उस ब्रह्म के समान दूसरा कोई भी नहीं है। इसी श्रुति की स्पष्ट रूप से व्याख्या सात्विक "पद्म पुराण" में है। यथा। रुद्रो दिशति यन्मंत्रं यस्य नाम महद्यशः। तस्य नास्त्युपमा क्वापितं रामं राघवम्भजे ॥ अर्थात् शिवजी काशी पुरी में जिस षडक्षर महा मंत्र को मरण काल में सबको उपदेश करते हैं, वेद कहते हैं कि जिस के नाम का महान् यश है, उसकी उपमा कहीं भी नहीं है। उस श्रीराम राघव को मैं भजता हूं। इत्यादि कहा है।

विस्तार से देखना हो तो वेदार्थ प्रकाश रामायण अथवा उपासना त्रय सिद्धांत को देखो। पुनः नारद पंचरात्र वशिष्ठ संहिता अध्याय ८७ अयोध्या नगरी नित्या सच्चिदानन्द रूपिणी। यस्यां शांशेन वैकुण्ठाः गोलोकादि प्रतिष्ठिताः ॥ यत्र श्री सरयू नित्या प्रेम वारि प्रवाहिनी। यस्यां शांशेन सम्भूता विरजादि सरिद्वराः ॥ अर्थात् श्री अयोध्या नगरी नित्य है और सच्चिदानन्दको स्वरूप है जिनके अंशांश से सब वैकुण्ठ तथा गोलोक प्रतिष्ठित हैं जहां नित्य श्री सरयू जी प्रेमवारि करके परिपूर्ण बहती हैं जिनके अंशांश से विरजादि श्रेष्ठ नदी सब हुई हैं। पुनः अथर्वण वेदोक्त वेद सारो पनिषत् में लिखा हैं यथा मंत्रः—

वा अयोध्यापूः सासर्ववैकुण्ठा नामेव मूलाधारा मूल प्रकृतेः परा तत्सद्ब्रह्म मया विरजोत्तरा दिव्य रत्न कोषाढ्यां तस्यां नित्यमेव

सीतारामयोः विहारस्थलमस्तीति उत्तरार्द्धं। अर्थात् जो श्री अयोध्यापुरी सब वैकुण्ठों का मूल आधार है मूल प्रकृति से परे है सच्चिदानंद स्वरूप है विरजा नदी के उत्तर है दिव्य रत्न कोष से युक्त है उस अयोध्या जीमें श्रीसीताराम जी कानित्य बिहारस्थल है इत्यादि बहुत कहा है। इसी से श्रीराम जीके नाम, रूप, लीला, और धामचारों परात्पर अनादि ब्रह्म हैं। आगे यंत्र कीविधि कहते हैं।

मूल—अथ यंत्रं सम् लिख्यते। राम प्राप्तै मुमुक्षुभिः यंत्रं विना न संसिद्धि मंत्राणां देव तात्मनाम्। काम क्रोधादि दोषाणां यंत्रणां ये न वैभवेत्। ततो यंत्र मिति प्रोक्तं यमनाद्यंत्र मित्यपि। षट् कोणं प्रथमं लेख्यं वृत्तं संविलिखे ततः। अष्टौ दलानि लेख्यानि ततस्याच्च तुरस्रकम्। सर्वैश्च लक्षणै युक्तं दिव्यं सर्व सुख प्रदम्। सर्वावतार बीजैश्च वेष्ट येद्यंत्र मुत्त मम्। ततश्च पूजनं कुर्याद्यंत्र स्यैतस्य सर्वदा। तन्मध्ये व्यक्त मालेख्यं साध्य कर्म विधानतः

वीजंपुनस्त द्विलिखेत्तत् क्रोडी कृत्यमान् मथम् ।

अर्थात् अब यंत्र लिखते हैं श्रीरामजी के प्राप्ति के लिये मुमुक्षुजन विना यंत्र पूजनकिये मंत्रात्मक देवताको सिद्ध नहीं कर सकते हैं इसलिए यंत्रका अवश्य पूजन करना चाहिये। काम क्रोधादि दोषों को जिन करके यंत्रणा (ताड़ना) हो उस से यंत्र ऐसा कहा है। अथवा सब दिव्य गुणों को वश करने से भी यंत्र कहा जाता है। यंत्र किस प्रकार से बनावे सो दिखाते हैं। प्रथम दो त्रिकोण के षट्कोण चक्र बनावे फिर चारो ओर से गोलाकार लिखे षट्कोण चक्र क्या है सो श्रीराम तापनीयोपनिषत् के ३२।३३।३४। मंत्र में पूर्ण व्याख्यान है देखलीजियेगा। फिर आठ दल लिखे बारह वज्र शूल सहित सत्व, रज, तम, रूप, तीनरेखा युक्त चतुरस्रभूगृह लिखे चारों दिशों में चार द्वार लिखे जोकि सब लक्षणों करके युक्त दिव्य सवसुख का देनेवाला हो। यंत्रको सब अवतारों के वीजसे वेष्टितकरे तब इस यंत्रको सर्वदा पूजनकरे। यंत्रके मध्य में विधान पूर्वक स्पष्ट साध्य कर्मलिखे भाव वीचमें (रां) वीज लिखकर क्रोड में यानी वीजके मध्य में कामवीज (क्लीं) लिखे रां वीज के नीचे द्वितीया विभक्ति सहित साध्य इष्ट कार्य्य लिखेरां वीजके ऊपर षष्ठि विभक्ति सहित साधक नाम भी लिखे औररां वीजके दोनों पार्श्व (वगल) में दो कुरुलिखे इसविधान से लिखे।

मूल—अथ तत्पंच वीजानामावृत्तिं विदधीतवै । भूयो दशाक्षरेणत द्वेष्टयेच्छुद्ध बुद्धिमान् अग्निकोणादि कोणेषु षडंगानि क्रमाल्लिखेत् । पुनः कोणकपोलेषु ह्रींश्रीं च विलिखेत्सुधीः । प्रतिकोणाग्र मालेख्यं हुं बीजं केशरेष्वच । वर्ण माला मनोख्याता चत्वारिंशच सप्तच । वर्णा सप्त दलेष्वेबं षट् षट् पंचाष्टमे दले । पूर्वस्याद्वेष्टयेत्कादि वर्णैसर्वंचतत्ववित् । लिखेद्बीजद्वयं सम्यक् नरसिंह वाराहयोः । दिग्विदुत्तुचपूर्वस्यां भूगृहेचतुरस्रकेः । यंत्रमेतत्समाराध्य भुक्तिं मुक्तिं लभेन्नरः ।

अर्थ—फिर उस के पीछे पञ्च बीज यानी रीं रूं रैं रौं रः चारो ओर से लिखे भाव मध्य में रां बीज काम बीज के सहित लिखे और पांचों कोष्ठ में पाँचों बीज लिख करके दशाक्षर "हुंजानकी वल्लभाय स्वाहा" इस मन्त्र से शुद्ध होकर बुद्धिमान वेष्टित करे। अग्नि कोणादि छवो कोण में षंडंगन्यास

अर्थात् ॐ रां हृदयाय नमः ॐ रीं शिरसे स्वाहा ॐ रूं शिषायै वषट् ॐ रैं कवचायहुं ॐ रौं नेत्राभ्यां वौषट् ॐ रः अस्त्राय फट् यह षडंगन्यास क्रम से लिखे फिर कोण के कपोल में ह्रीं और श्रीं दोनों को बुद्धिमान लिखे। कोण के अग्रभाग में हुंबीज को लिखे और अष्टदल में वर्णमाला मन्त्र जो ४७ अक्षर का प्रसिद्ध है सो लिखे कैसे लिखे सो क्रम दिखाते हैं। सात दल में तो छ छ अक्षर लिखे और अठवाँ दल में पाँच अक्षर लिखे उसको पूर्व से कादि वर्णों से अर्थात् कं खं गं घं ङं। चं छं जं झं ञं। टं ठं डं ढं णं। तं थं दं धं नं। पं फं बं भं मं। यं रं लं वं। शं षं सं हं। लं क्षं इति इन अक्षरों से तत्व के ज्ञाता वेष्ठित करे चतुरस्त्र तीन भूगृह के भीतर पूर्वादिक दशो दिशा में नृसिंह बीज क्ष्रौं और वराह बीज हुं दोनों बीज को लिखे यह यंत्र सब प्रकार से आराधन करने योग्य है इसके पूजन करने से मनुष्य भुक्ति (भोगपदार्थ) और मुक्ति को प्राप्त होते हैं अब यंत्र की दूसरी विधि कहते हैं यथा-

मूल-मध्येऽथवा लिखेत्तारं षट् कोणेष्वपि च क्रमात्। वर्णा श्रीराम मन्त्रस्य संधिष्वगं च मान्मथम्। गण्डेषु च तथा मायां किंजल्के चा विलेखनम्। पूर्ववत्त्रापर्णेषु माला मन्त्रं क्रमा ल्लिखेत्। दशाक्षरेण संवेष्ट्य कादीनि विलि

स्वेत्ततः। दिग्विदुत्तु तथा वीजे नरसिंहवाराहयोः
यंत्रान्तर मिदं सांगं मावरणं विधि नार्चयेत्
राजते वाथ सौवर्णे भूर्जे संलेख्य पूजयेत।

अर्थ-अथवा यंत्रके मध्य से लेकर छवो कोण मे क्रम से श्रीराममंत्रों के अक्षर सहित ॐ कारको लिखे भाव ॐ रां ॐ रा ॐ मा ॐ य ॐ न ॐ मः इस प्रकार से लिखे और छवो कोणके संधिमें अंगन्यास पूर्वक कामवीज क्लीं को लिखेभाव क्लींरां हृदयायनमः क्लींरीं शिरसे स्वाहा क्लींरूं शिखायैव षट् क्लींरैं कवचाय हुं क्लींरौं नेत्राभ्यां वौषट् क्लींरः अस्त्रायफट् इस प्रकार से लिखे और कपोल में माया वीज ह्रीं लिखे और केशर में अर्थात् अष्टदल में पूर्व के समान ४७ अक्षर का जो वर्णमाला मंत्र है सो क्रमसे लिखे दशाक्षरमंत्र से वेष्टित करके फिरकादि अक्षरों को लिखे तथा चतुरस्र भूगृह के भीतर पूर्वादिक दशों दिशामें नृसिह वाराह दोनों के बीजलिखे यह अन्य प्रकार का यंत्र अंग सहित आवरणों को विधिपूर्वक पूजन करे। चाँदी में अथवा, स्वर्ण में चाहे भोजपत्र में लिखकर पूजन करे इसके आगे दशाक्षर मंत्र तथा वर्णमालामंत्र के स्वरूप दिखाते हैं।

मूल-हुं जानकी वल्लभाय स्वाहा द्रौं

हुं पठेत्पुनः। दशाक्षरो वाराहस्य नरसिंहस्य मनुःस्मृतः ह्रीं श्रीं क्लीं तथोंनमो वदेत्तदनन्तरं भगवतेपदं ब्रूयात्–इति रघुनन्दनायेति पदं वदेत् ततो रक्षोघ्न विशदायेतिच मधुरे न पदं पश्चात प्रसन्नेति ततो वदेत् वदनायेति पदं ब्रूयात्पश्चादमिततेजसेइति ततोबलाय निगदेत् रामाय विष्णवे नमः ह्रीं श्रीं क्लींचों नमोभगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्न विशदाय मधुर प्रसन्न वदनाय अमित तेजसे बलाय रामाय विष्णवे नमः। एषमाला मनुः प्रोक्तो नराणां चिंतितार्थदः।

अर्थ–हुं जानकी वल्लभाय स्वाहा यह दशाक्षर मंत्र है क्षौ हुं यह दोनों नृसिंह और वाराह मंत्र का वीज है। अब माला मंत्र कहते हैं ह्रीं श्रीं क्रीं तथा ॐ नमो कहै। तदनंतर भगवतेपद को कहना फिर रघुनन्दनाय ऐसा कहै तब रक्षोघ्न विशदाय कहै पीछे मधुर पद कहै तब प्रसन्न ऐसा

कहै फिर वदनाय ऐसा कहै पीछे अमित तेजसे ऐसा कहै तब बलाय कह कर रामाय विष्णवे नमः कहै। ऐसा मंत्रोद्धार हुआ। ॐ नमो भगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्न विशदाय मधुर प्रसन्न वदनाय अमित तेज से बलाय रामाय विष्णवे नमः यह माला मंत्र कहा है यह मंत्र मनुष्यों को चिंतितफल का देने वाला है।

मूल ॐ सीं सीतायै वदन् नमोंतः सीता मंत्र उदाहृतः। मंत्रेऽस्मिन् राममाराध्य सांगं सावरणं तथा। आराध्य गुटिकी कृत्य धारये द्यंत्र मन्त्रहम्। सर्व दुःख प्रशमनं पुत्र पौत्र प्रदं नृणाम्। सर्व विद्या प्रदं शश्वत् सर्व सौख्य करं सदा। अन्या भिचार कृत्येषु वज्र पंजर मेवहि। किं बहू क्त्या नृणाम् सर्व सिद्धिदं शोक नाशक मिति॥ यंत्र सम्यक् विधानेन धारयेत्साधको त्तमः। श्रीराम द्वार पीठाग्रे परिवार तया स्थितान्। गणेशादि सुरान् क्षेत्र पालान्सर्वान्स मर्चयेत्। स्वांतनुं शोध यित्वातः परं पूजन

माचरेत। उपचारैः षोडश भिस्तथैकादशभिः सुधीः। पंचभिर्वा यजेद्देवान् स्व स्व शक्त्य नुकूलतः। सर्व शक्ति युतं रामं सांगं सावरणं जपेत्। स्तूयात्सर्वान् परिवारान् राम प्रीत्यर्थ मादरात्। एवंयः कुरुते पूजां यंत्र राजस्य मानवः इह काम्यं सुखं लब्ध्वा प्रेत्य साकेतमृच्छति।

अर्थ-सीं सीतायैकह कर अंतमें नमः कहै इसको सीता मंत्र कहा है इस मंत्र में अंग तथा आवरणों के सहित श्रीराम जीकी आराधना करे। आराधना कर के उत्तम यंत्र को बुद्धिमान् गुटिकाबनाकरधारण करे यह यंत्र सर्व दुःखों। का नाश करने वाला मनुष्यों को पुत्र पौत्र का देनेवाला और फिर कैसा है कि सर्व ऐश्वर्य्य को देने वाला है। सब को वशकरने वाला शत्रु को नाश करने वाला सर्व विद्या देने वाला सर्व सुख को सर्वदा देने वाला है। और भी अन्य मोहन, मारण, वशीकरण, उच्चाटनादि कर्मों में यही वज्रपंजर कामदेते हैं। बहुत कहने का क्या प्रयोजन है मनुष्यों को यह यंत्र सर्वसिद्धि का देनेवाला और शोक नाशक है ऐसा कहा है। उत्तम साधन करनेवाले को चाहिये कि संपूर्ण विधान

पूर्व्वक यंत्र को धारण करे श्रीरामजी के द्वार पीठ के अग्रभाग में परिवार सहित उन देवताओं को स्थित अर्थात् गणेश, दुर्गा, क्षेत्रपाल, सरस्वती आदि देवों को सब प्रकार से पूजन करे पीछे अपने शरीर को शोधन करके पर पूजन अर्थात् प्रधान पूजन करे वह पूजन बुद्धिमान षोडशोपचार से तथा एकादश प्रकार से अथवा पञ्चोपचार से करे पूजन के पीछे सब शक्तियों के सहित अंग आवरणों के सहित श्रीरामजी को जपे फिर श्रीरामजी की प्रीति के अर्थ सब परिवारों की आदर समेत स्तुति करे धृष्ट, जयन्तादि अष्ट मंत्रियों को मेरे प्रीति के लिये नमस्कार करे इस प्रकार से जो मनुष्य यंत्र राज की पूजा करते हैं वह इस लोक में सब सुख को भोग करके मरे पीछे सर्वोपरि श्रीसाकेत लोक को प्राप्त होते हैं। इसके आगे शरणागत मन्त्रद्वय का ऋषि देवता तथा अंग न्यासादिक लिखते हैं।

मूल—अस्य श्रीराम शरणागत मंत्रस्य श्री रामचन्द्रो ऋषिर्देवी गायत्री छन्दः परमात्मा श्रीरामचन्द्रो देवता रां बीजं नमः शक्तिः सर्वा भिष्टार्थे सिद्धये जपे विनियोगः मूले न कर शोधनं कृत्वा प्रथमं वीजं करतल करयोर्न्यसेत्

शेषाक्षराण्यंगुलि पर्वसु विन्यसेत् ।

अर्थ—इस श्रीराम शरणागत मन्त्र के श्रीरामचन्द्र ऋषि हैं, गायत्रीदेवी छन्द है, परमात्मा श्रीरामचन्द्र देवता हैं, राँ बीज है, नमः शक्ति है, सर्व अभिष्ट अर्थ सिद्धि के लिये जप करने में विनियोग करते हैं। मूल मंत्र से करशोधन करके प्रथम बीज को करतल कर दोनों में न्यास करे शेष सब अक्षरों को सब अंगुलि के पर्वों में विधि पूर्वक न्यास करे सो दिखाते हैं वह अक्षरार्थ ही समझ लेना चाहिये।

मूल—श्री मद्राम चन्द्र चरणौ अंगुष्ठाभ्यां नमः शरणं तर्जनीभ्यां नमः प्रपद्ये मध्यमाभ्यां नमः श्रीमते अनामिकाभ्यां नमः रामचन्द्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः नमः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः श्रीरामचन्द्र चरणौ ज्ञानायहृदयायनमः शरणमैश्वर्य्याय शिरसे स्वाहा प्रपद्ये शक्त्ये शिखायै वषट् श्रीमते बलाय कवचायहुं राम चन्द्राय तेजसे नेत्राभ्यां वौषट् नमो बीजाय अस्त्राय फट् श्रीरामचन्द्रचरणौ ज्ञानाय उदराय

नमः शरणमैश्वर्य्याय पृष्ठाय नमः प्रपद्ये शक्तये बाहुभ्यां नमः श्रीमते बलाय ऊरूभ्यां नमः रामचन्द्राय तेजसे जानुभ्यां नमः नमोवीर्य्याय पादाभ्यां नमः अथदेहन्यासः श्रीं नमः मंनमः रांनमः मंनमः चंनमः द्रंनमः चंनमः रंनमः णौं नमः शंनमः रंनमः णंनमः प्रंनमः पंनमः द्यंनमः श्रीनमः मंनमः तेंनमः रांनमः मंनमः चंनमः द्रांनमः यंनमः नंनमः मोंनमः एवमुपर्य्य विन्यसेत् श्रींमूर्ध्निमतेभालेरामनेत्रे चन्द्र-नासिका यां चश्रोत्रे णौ मुखेशरभुजयोः णंहृदिप्रपस्तनयोः द्येनाभौ श्रीपृष्ठेमतेजंघयोः रामकट्यां चन्द्रा ऊर्वोः य जानुनि नमः पादयेः अथध्यानम्।

जानकी सहितं राममिन्द्र नील मणि प्रभम्।

ज्ञान मुद्रा धरं सर्व भूषाभिः समलं कृतम् ॥

पार्श्वन्यस्त धनुर्बाणं सर्वावयव सुन्दरम् ।
राजीवलोचनं ध्यायेत्सर्वा भिष्टार्थ सिद्धये ॥

अर्थ-इन्द्रनील मणिके समान कांति युक्त श्रीजानकी जी के सहित ज्ञान मुद्राधारण करने वाले सब भूषणों करके भूषित बगलमें धनुष बाण को धरे सर्व्वांग सुन्दर कमलदल से नेत्र ऐसे सर्व अभिष्टार्थ के सिद्धि के लिये श्री रामजी का ध्यान करे। तब श्री युगलमंत्र ॐ नमः सीतारामाभ्यां इसको जपे आगे अंग न्यासादि कहते हैं सो अक्षरार्थ ही जानना चाहिये।

मूल ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः नमः तर्जनीभ्यां नमः सीता रामाभ्यां मध्यमाभ्यां नमः ॐ अनामिकाभ्यां नमः नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः सीता रामाभ्यां करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ॐ ज्ञानाय हृदयाय नमः नमः ऐ श्वर्य्याय शिरसे स्वाहा सीतारामाभ्यां शक्तये शिखायैवौषट्ॐ बलाय कवचायहुंनमस्तेजसे नेत्राभ्यां सीतारामाभ्यां वीर्य्याय अस्त्राय फट् ध्यानम् पूर्ववत्।

यहाँ पर्य्यंत श्री युगल मंत्रका अंगन्यासादि जानना चाहिये आगे पूर्वके समान श्री सीताराम जी का ध्यान करके श्री मंत्रराजका जाप करे।

मूल--अस्य रामषडक्षर मंत्रराजस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्री रामो देवता रांबीजं नमः शक्तिः रामायेति कीलकं श्री राम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अर्थात् इस श्री रामषडक्षर मंत्र राजका श्री ब्रह्मा जी ऋषि हैं, गायत्री छन्द है, श्री रामजी देवता हैं, नमः शक्ति है, रामाय यह कीलकम् है श्रीरामजी के प्रीति के लिये जप में विनियोग करे आगे श्री राममंत्रराज का अंगन्यासादि लिखते हैं सो अक्षरार्थही जानना चाहिये।

मूल—ॐ ब्रह्मणे ऋषयेनमः शिरशि ॐ गायत्री छन्दसे नमो मुखेॐ रां देवतायै नमो हृदि ॐ रां बीजायनमोगुह्ये ॐ नमः शक्त्यै

नमः पादयो; ॐ रामाय कीलकाय नमः सर्वांगे ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ रीं तर्जनीभ्यांस्वाहा ॐ रूं मध्यमाभ्यां वषट् ॐ रैं अनामिकाभ्यां हुं ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ रः करतल करपृष्ठाभ्यां फट् ॐ रां हृदयाय नमः ॐ रीं शिर से स्वाहा ॐ रूं शिखायै वषट् ॐ रैं कवचाय हुं ॐ रौं नेत्राभ्यां वौषट् ॐ रः अस्त्राय फट् रां नमः ब्रह्म रन्ध्रे रां नमः भ्रुवोर्मध्ये मां नमः हृदि यं नमः नाभौ नं नमः लिंगे मंनमः पादयोः रांनमः शिरसि रां नमो मुखे मां नमः हृदयेयं नमः नाभौ नं नमः गुह्ये मं नमः पादयोः रां नमः नाभौ रां नमः गुह्ये मां नमः पादयोः यं नमः शिरसि नं नमः मुखे मं नमः हृदये रां नमः पादयो रां नमः गुह्ये मां नमः

नाभौ यंनमः हृदये नंनमः मुखे मंनमः शिरसि रं नमः शिरसि रां नमः मुखे मां नमः हृदये यं नमः नाभौ नं नमः गुह्ये मं नमः पादयोः रं नमः नाभौ रं नमः गुह्ये मां नमः पादयोः यं नमः शिरसि नं नमः मुखे मं नमः हृदये रां नमः शिरसि रामाय नमः नाभौ नमो नमः पादयोः।

यहां तक श्रीराम मंत्र राजका अंग न्यासादिक जानना चाहिये। यहां से आगे देह शुद्धि तथा पूजनादिके कर्म लिखते हैं।

मूल–देह शुद्धिं विधायादौ पूजयेद्रघुनन्दनम्। पूजा द्रव्याणि संशोध्य पूजापात्राणि शोधयेत् ॥ द्रव्यै सुमोत्तमैः सम्यक् पूजयेत् पुरुषोत्तमम्। विधिनाराधितो रामः सम्यगाराधितो-भवेत्॥ मन्दिरं मार्जयित्वाथ देवमावाहयेद्विभुम्। आवाहयित्वा देवेशं मध्ये पाद्यं तथाऽर्पयेत्॥ मधुपर्कं ततो दद्यात्तत्त्वाच मयेद्विभुम्।

सरय्वादि सलिलैर्देवम् स्नापयेत्सीतयासह ॥

अर्थ—प्रथम शरीर शुद्धि करके तब श्रीरामजी को पूजे तहां प्रथम पूजा करने का द्रव्य शोधन करके फिर पूजा पात्र (पार्षद) शुद्ध करे पूजा के सब द्रव्य (सामग्री) सब प्रकार से प्रोक्षण करके पुरुषोत्तम श्रीरामजी को षोडशोपचार से पूजे क्योंकि विधि पूर्वक पूजन करने से श्रीरामजी सब प्रकार से पूजित होते हैं । मन्दिर साफ करके श्रीरामदेव को आवाहन करके मध्य में पाद्य अर्पण करे । फिर मधुपर्क को देवे फिर प्रभु का आचमन करावे सरयू आदि नदियों के जल से अथवा जहाँ जिस नदी तीर्थादि के जल वर्तमान हों उससे जानकी जी के सहित प्रभु को स्नान करावे ।

मूल—वस्त्राणि धापयेत्सम्यक् यज्ञ सूत्रंचधापयेत् । अंग रागं समर्प्याथ तुलसी पुष्पमालिका ॥ समर्पयेत्ततः सर्व भूषणैर्भूषये द्विभुम् । अंगाणि पूजयेत्सम्यक् ततो रामः प्रसीदति ॥ धूपं दीपंच नैवेद्य मारातिक मथार्प्ययेत् । पुष्पांजलि मथो दद्यात्परिक्रमण मेवच ॥ प्रणमेत् शास्त्र विधिना स्तुयात्स्तोत्रै परात्परम् । एवं सम्पूजयेद्यस्तु सोऽमृतत्वंच गच्छति ॥ इदंतु परमं गुह्यं रहस्यं सर्व

दुर्लभम् । रामभक्ताय दातव्यं न देयंप्राकृतायेचेति ॥ इत्यथर्वणे विश्वम्भरोपनिषत् समाप्तः ॥

अर्थ—सब प्रकार से वस्त्रों को और यज्ञोपवीत को धारण करावे अंग राग (सुगंधित पदार्थ) समर्पण करे तथा तुलसी पुष्प की माला भी धारण करावे फिर सब भूषणों से श्रीरामजी को भूषित करे और जितने अंग देवता हैं उन सबको विधि से पूजन करे तब श्रीराम जी प्रसन्न होते हैं। धूप, दीप, नैवेद्य, और आर्ति यह सब अर्पण करके पीछे पुष्पांजलि देकर चार परिक्रमा पूर्वक परात्पर स्तोत्रों से स्तुति करके शास्त्र विधि से साष्टांग प्रणाम करे । जो इस प्रकार से पूजा करते हैं वे मोक्ष को प्राप्त होते हैं यह रहस्य अत्यंत गुप्त है सबको मिलना दुर्लभ है केवल श्री रामभक्त को देना चाहिये प्राकृत अर्थात् जो कोई माया मोह में आशक्त हैं और परतत्व से विमुख हैं उनको नहीं देना चाहिये।

इत्यथर्वणे रहस्ये श्रीअयोध्या वासिना वैष्णव सरयूदासेन विरचिता श्रीविश्वम्भरो पनिषदः श्रीरामतत्व प्रकाशिका टीका समाप्ता इत्यलम्।



सब सज्जनों से प्रार्थना ।

जैसा यहाँ पर विश्वम्भर उपनिषत् में श्री रामजीके नाम रूप, लीला और धामको मन वचन से परे लिखा है वैसेही अथर्वण वेदोक्त वेद सारोपनिषत् के प्रथम खंड में लिखा है यथा—

जनको: वैदेहो याज्ञवल्क्य मुपसृत्य पप्रच्छ को हवै महान् पुरुषोयं ज्ञात्वेह विमुक्तो भवतीति सहोवाच कौशल्येयो रघुनाथ एव महा पुरुषः तस्य नाम रूप धाम लीला मनो वचनाद्य विषयाः स पुनरुवाचे दृशं कथमहं शक्नुयां विज्ञातुं ज्ञापका ज्ञानादिति स पुनः प्रति वक्ति अथैतेश्लोका भवन्ति ।

अर्थात् विदेह श्री राजा जनक जी योगी श्रीयाज्ञ वल्क्यजी के समीप जाकर बोले कि अतिशय निश्चय कर महा पुरुष कौन हैं ? जिनको जान कर मनुष्य इस संसार से विमुक्त होता है इति । यह सुनकर योगी श्री याज्ञवल्क्य जी निश्चय करके बोले कि श्री कौशल्यानन्दन श्री रघुनाथ ही महा पुरुष हैं उनका नाम, रूप, धाम और लीला चारो मन वचन से अविषय (अगोचर) है अर्थात् मन वचन से परे है । यह सुनकर फिर श्री जनक जी बोले कि जब इस प्रकार मन वचन से परे है तो मैं जानने को कैसे समर्थ हूँ यदि कहिये कि और ही किसी से पूँछ लेना उस पर करते हैं कि ज्ञापक के अज्ञान से भाव

आपके सिवाय इस तत्व को कोई नहीं जान सकते हैं किससे पूंछे आपही कहिये। यह सुनकर पुनः योगी श्री याज्ञ वल्क्य जी बोलते हैं अब यह सब श्लोकों से उत्तर देते हैं।

विरजायाः परे पारे लोको वैकुण्ठ संज्ञितः।
तन्मध्ये राजतेऽयोध्या सच्चिदानन्द रूपिणी॥
तत्रलोके चतुर्वाहू राम नारायणः प्रभुः।
अयोध्यायां यदा चास्य ह्यवतारो भवेदिह॥
तदास्ति राम नामेद मवतार विधौ विभोः।
तन्नाम्नो नाम रहित स्याम्नातं नाम तस्यहि॥

अर्थात् विरजा नदी के परे पार में वैकुण्ठ लोक है (वैकुण्ठ उसको कहते हैं जो नाश से रहित हो) उस वैकुण्ठ लोक के मध्य में सच्चिदानन्द की स्वरूप श्री अयोध्या पुरी शोभा देती है उस वैकुण्ठ लोक में चतुर्बाहु अर्थात् चार भुजा वाले श्री मन्नारायण प्रभु हैं सो श्री अयोध्याजी में जब इनका अवतार होता है तब अवतार विधि में इस राम नारायण विभुका यह राम नाम है क्यों कि उस पर ब्रह्म श्री राम जी का नाम प्राकृत नाम रहित है भाव मन बचन से परे है इस राम नाम से पर राम नाम सूचित होता है।

दश कण्ठ वधाद्यादि लीला विष्णोः प्रकीर्तिता।
सकदाचित्तु कल्पेऽस्मिन् लोके साकेत संज्ञिते॥
पुष्प युद्ध रघूत्तंशः करोति सखिभिस्सह।

कस्मिन् कल्पेतु रामोसौ वाणजन्येच्छया विभुः ॥
तैरेव सखिभिः सार्द्ध माविर्भूय रघूद्वहः ।
रावणादि वधे लीलां यथा विष्णुः करोतिसः ।
तथाऽयमपि तत्रैव करोति विविधाः क्रियाः ।
क्रियाश्च वर्णयित्वाथ विष्णु लीला विधानतः ॥
लीलाऽनिर्वचनीयत्वं ततो भवति सूचितम् ।

अर्थात् रावणादि का वध करना विष्णु लीला कही है वह कदाचित् इस साकेत नामक लोक में सखाओं के सहित पुष्प युद्ध अर्थात् पुष्पों से युद्ध करते हैं। वह सर्व शक्तिमान् श्री रामजी किसी कल्प में वाण जन्य युद्ध की इच्छा से भाव साकेत में सर्वदा पुष्प युद्ध करते हैं कभी कभी वाण से युद्ध करने की इच्छा हो जाती है तब प्रताप भानु, अरिमर्दन सखा के सहित भूमण्डल में आकर रघुकुल में अवतार धारण करके जैसा रावणादिक वध लीला को चतुर्बाहु रामनारायण करते हैं उसी प्रकार से उसी स्थान में यह श्रीरामजी भी रावणादिक वध लीला नाना प्रकार के करते हैं। फिर उस लीला कर्मों को विष्णु लीला के विधान से वर्णन करके अनिर्वचनीयत्व लीला अर्थात् मन वचन से परे लीला सूचित होती है। रहस्य ग्रंथों में कहीं कहीं लिखा है कि देवताओं की प्रार्थना से जब श्रीरामजी बन को चले तब आपको अयोध्या छोड़ना असह्य जान पड़ा क्योंकि लिखा भी

है "अयोध्यायाः परित्यज्य पादमेकं न गच्छति" अर्थात् श्री अयोध्याजी को छोड़ कर श्री रामजी एक पग भी कहीं नहीं जाते हैं यह सर्वथा निश्चय है। तब श्री वशिष्ठादि ऋषियों को बुला कर श्री रामजी बोले कि हमको श्री अयोध्याजी से न जाना पड़े और देवताओं के कार्य हो जावें सो कौन ऐसा उपाय है कहिए तब श्री वशिष्ठादिक ऋषियों ने कहा कि आप चल कर श्री चित्रकूट में निवास कीजिये क्योंकि श्री अयोध्याजी और चित्रकूट एकही है। तब श्री रामजी तीनों मूर्ति चल कर श्री चित्रकूट में निवास किये। कुछ दिन के पीछे जब देवताओं के कार्य्य करने का समय आया तब श्री रामजी ने अपने अंश श्रीमन्नारायण को स्मरण किया। लक्ष्मीशेष के सहित श्री मन्नारायण आये आपने देवताओं के कार्य्य करने की आज्ञा दी। आज्ञा पाकर श्री मन्नारायण, राम, लक्ष्मण और श्री जानकीजी के स्वरूप धारण करके श्रीचित्रकूट से चल कर सब चरित्र यथोचित किये। इसी लिये यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ। जैसे श्री गोलोक वासी कृष्ण भगवान् वृन्दावन को छोड़ कर कहीं नहीं जाते हैं। और मथुरा से लेकर द्वारका पर्य्यन्त श्री मन्नारायण चरित्र करते हैं। यह प्रसंग पद्मपुराणादिक में प्रसिद्ध है और श्री मद्भागवत में गुप्त रीति से है। सोई गुप्त रहस्य यहाँ भी जानना चाहिये।

किंचाऽयोध्यापुरी नाम साकेत इति चोच्यते।
इमामयोध्या माख्याय साऽयोध्या वर्ण्यते पुनः॥

अनिर्वाच्यत्व मेतस्याऽव्यक्त मेवानुभूयते ।
रामावतार माधत्ते विष्णु साकेत संज्ञिते ॥
तद्रूपं वर्णयित्वाऽनिर्वचनीयं प्रभोः पुनः ।
रूपमाख्यायते विद्भिर्महतः पुरुषस्यहि ॥
इत्यथर्वणे वेदे वेद सारोपनिषत् प्रथमखण्डे ॥

अर्थात् जिसका अयोध्या पुरी नाम है उसी को साकेत ऐसा कहते हैं इस अयोध्या का वर्णन करके वह मन वचन से परे अयोध्या को वर्णन करते हैं । साकेत वासी विष्णु रामावतार को धारण करके पर स्वरूप अर्थात् मन वचन से परे श्री रामरूप को वर्णन करके सूचित करते हैं इससे विद्वानों करके महापुरुष श्री रामही का रूप कथित है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये । इसी प्रकार से वेद सारोपनिषद में बहुत वर्णन है यह विषय विचार करने योग्य है । फिर जैसा यहाँ पर विश्वम्भरोपनिषत् में सहस्रों विष्णु नारायणादिक हाथ जोड़े श्री रामजी के सामने खड़े हैं यह लिखा है ऐसेही एक मन्त्र सामवेद में लिखा है । यथाः—

स श्री रामः सवितरी सर्वेषां ईश्वरः यमेवैष वृणुते स पुमानस्तु यमवेदस्माद्भूर्भुवः स्वः त्रिगुण मयो बभूव इती मं नरहरिः स्तौतीमं गंधमादनः स्तौतीमं यज्ञतनु स्तौतीमं महाविष्णुः स्तौतीमं विष्णुः स्तौतीमं महाशंभुः स्तौतीमं द्वौतं मण्डलं तपति यत्पुरुषं दक्षिणाक्षं

मण्डलोवै मण्डलार्च्यः मण्डलस्थमिति सामवेदे तैत्तिरीयशाखायाम् ।

अर्थात् वह श्री राम सवितरी यानी सूर्य्य मण्डल मध्यस्थं रामं सीता समन्वितम् " इत्यादि प्रमाणों से सविता के मध्य वर्ती होने से सवितरी नाम से कहे जाते हैं वह सवितरी श्री राम सब के ईश्वर हैं यह जिसको निश्चय पूर्वक स्वीकार करता है वह पुरुष होता है भाव जिसको स्वयं प्रभु अंगीकार करता है वही पुरुषत्व को प्राप्त होता है नहीं तो नरदेह वृथा है। कठवल्ली में एक मन्त्र आया है। यथाः—

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैव आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम् ।

अर्थात् यमराज कहते हैं कि यह आत्मा (सर्वान्तर्यामी प्रभु) न वेदों के पढने से पाने योग्य है, न बुद्धि से, न अनेक शास्त्रों के श्रवण करने से पाने योग्य है यह स्वयं इच्छा करके जिसको स्वीकार करता है उसी ही करके पाने योग्य है और उसी को यह अंतर्यामी अपने दिव्यस्वरूप को प्रकाश करता है भाव विना उनकी कृपा जीव कदापि प्रभु को प्राप्त नहीं हो सकता है। जो सिद्धांत यहाँ पर है सोई सिद्धांत सामवेद का है। यही श्री रामजी से भूर्भुवः स्वः अर्थात् त्रिगुणात्मक तीनों लोक हुआ है इन्हीं श्री रामको नरसिंह, गंधमादन (बदरी वनवासी नरनारायण) यज्ञतनु (वाराह) महाविष्णु, विष्णु, महाशम्भु यह सब स्तुति करते हैं जो द्वैत मण्डल

(ब्रह्माण्ड मण्डल) को तपति (प्रकाश कर्ता) है जो पुरुष दक्षिणाक्षं (दक्षिण नेत्र में) रहता है जो निश्चय करके मण्डल रूप है मण्डल करके पूज्य है मण्डल में स्थित है यह सामवेद तैत्तिरीय शाखा का मन्त्र है इसलिये श्रीरामजी अनादि ब्रह्म हैं।

अब आदि कवि श्री सद्वाल्मीकिजी का ब्रह्म विचार के विषय में क्या मन्तव्य है सो भी सुनिये। श्री महर्षिजीने प्रथम सर्ग (मूल रामायण) में श्री नारदजी से प्रश्न किया कि इस समय इस लोक में गुणवान् १ वीर्य्यवान् २ धर्म्मज्ञ ३ कृतज्ञ ४ सत्यवाक्य वाले ५ दृढ व्रतवाले ६ सुन्दर चरित्र करके युक्त ७ सब जीव के हित करनेवाले ८ विद्वान् ९ समर्थ १० प्रिय दर्शनवाले ११ आत्मवान् १२ क्रोध को जीतनेवाले १३ कीर्तिमान् १४ दोष रहित गुण वाले १५ देवता और दैत्यक्रोध युक्त किससे युद्ध में भय को प्राप्त होते हैं यह १६ गुण सम्पन्न नर कौन हैं? "महर्षेत्वं समर्थोसि ज्ञातु मेवं विधं नरम्" अर्थात् हे महर्षे ऐसे नर को जानने को आपही समर्थ हैं। भाव नर परमात्मा से उत्पन्न हुआ जो नार नाम ज्ञान उस को जो देवे उसको नारद कहते हैं। यथा ब्रह्मांडपुराणे अध्याय ११

ददाति नारं ज्ञानं च बालेभ्यश्च बालकः।
जाति स्मरो महा ज्ञानी ते नायं नारदाभिधः॥

तथाऽन्येपिच।

नारोऽभूत् परमात्मांशान्नारो ज्ञान मितिस्मृतः।

तस्याऽखंडस्य यो दाता तेना यं नारदाभिधः ॥

अर्थात् बाल्यावस्थाही से ज्ञान को देते हैं क्यों कि पूर्वजन्म ही से ज्ञानी हैं उसी से इनको नारद कहा है। अन्यत्र में भी कहा है कि नर परमात्मा के अशंसे नार हुआ उस नार को ज्ञान ऐसा कहा है उस अखण्ड ज्ञान को जो देने वाला हो उसे नारद ऐसा नाम कहा है। इन सब प्रमाणों से और ऋष गतौ धातु से ज्ञान पारंगत को ऋषि कहते हैं उसमें भी श्री नारद जी महर्षी हैं इससे नर संबंधि यथार्थ ज्ञान दाता नारद ही हैं दूसरा नहीं इसीलिये श्री नारद जी को "महर्षे त्वं समर्थोसि" कहा है। अब यहाँ नर शब्द पर विचार करना चाहिये नर सब्द का दो अर्थ है एक तो नर मनुष्य को कहते हैं दूसरा नर परमात्मा को कहते हैं। यथा "नरतीति नरः प्रोक्तः परमात्मा सनातनः" इस महा भारत के बचन से सब के प्रेरक सनातन परमात्मा को नर कहते हैं। पुनः "आपो वैनर सूनवः" इस से नरनाम परब्रह्म परमात्मा का है उसी सनातन परब्रह्म का यहाँ प्रश्नोत्तर द्वारा महर्षीजी निर्णय करते हैं नारद पंचरात्र अनंत संहिता में लिखा है यथाः—

आनन्दो द्विविधः प्रोक्तो मूर्तश्चामूर्त्त एवच।
अमूर्त्त स्या श्रयो मूर्तः परमात्मा नराकृतिः॥
स्थूल मष्ट भुजं प्रोक्तं सूक्ष्मं प्रोक्तं चतुर्भुजम्
परंतु द्विभुज प्रोक्तं तस्मा देत त्त्रयम्भजेत्

अर्थात् आनन्द दो प्रकार के हैं एक मूर्तिमान् अर्थात् सगुन ब्रह्म दूसरा अमूर्त निर्गुण ब्रह्म उनमें निर्गुण ब्रह्म का आश्रय (आधार) मूर्तिमान् सगुण ब्रह्म हैं वह परमात्मा नराकार हैं नराकार तीन स्वरूप हैं । उनमें स्थूल रूप अष्टभुज क्षीर सागर वासी (भूमापुरुष) को कहा है और चतुर्भुज श्रीमन्नारायण को सूक्ष्म कहा है इन दोनों से पर रूप द्विभुज को कहा है उससे तीनों रूपको भजना चाहिये भाव द्विभुज श्री राम रूप अनादि हैं और रूपकार्यार्थ हुए हैं सो अनादि नहीं हैं परन्तु अभिन्नांश होने से उनको भी भजना चाहिये । यदि यहाँ पर कोई कहे कि पर स्वरूप दो भुज श्रीराम ही हैं दूसरा नहीं यह कैसे सिद्ध हुआ तो सुनो उसी नारद पंचरात्र के पद्म संहिता में लिखा है । यथाः-

मरीचि मण्डले संस्थं वाणाद्यायुध लांछितम्
द्विहस्त मेक वक्त्रं च रूप माद्यमिदं हरेः ॥

अर्थात्-सूर्य्य मण्डल में स्थित धनुर्बाणादि आयुधों से चिन्हित दो हस्त एक मुखार्विन्द बस यही श्रीहरि के आदि स्वरूप हैं जैसा कि श्री गोस्वामी जी ने कहा है । सब कर परम प्रकासक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ॥ इत्यादि । इससे अनादि ब्रह्म नराकार परमात्मा श्री रामचन्द्र ही हैं जैसा कि विश्वम्भर उपनिषद में लिखा है क्यों कि नरचार आठ भुजावाले नहीं होते हैं द्विभुज ही होते हैं । सो इस

बात को पूज्यपाद श्रीगोस्वामी जी ने इस युक्ति से दिखाया है। यथा, विष्णु चारि भुज विधि मुखचारी । विकट वेष मुख पंच पुरारी ॥ अपर देव असकोउ न आही । यह छवि सखि पटतरिये जाही ॥ इत्यादि कहा है इसीसे प्रश्न के उत्तर में श्रीनारद जीने "इक्ष्वाकु वंश प्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः" कहा इसका तात्पर्य्य यही है कि वह नर परमात्मा श्रीराम ही हैं दूसरा नहीं भाव जैसे राम कहने से दशरथात्मज का वोध होता है और "रमन्ते योगिनोनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि" का अर्थ विचार करने से पर ब्रह्म का वोध होता है। उसी प्रकारसे नर कहने से सनातन ब्रह्म का भी बोध होता है और नर कहने से मनुष्यात्मादशरथात्मज श्री राम का भी बोध होता है। इसीसे युद्ध कांडमें ब्रह्माजीसे श्रीरामजीने ऐसा कहा है। यथा-आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम् । अर्थात् दशरथात्मज राम मनुष्य अपने को मानता हूं। और इक्ष्वाकु वंश प्रभव श्री राम को कहना सोतो लीला मात्र माधूर्य्य पक्ष है वास्तविक में इक्ष्वाकु वंशी सब नित्य हैं श्री दशरथ, कौशल्यादि सब नित्य हैं यह बात नारद पंचरात्र के वशिष्ठ संहिता में प्रसिद्ध है अध्याय ६

नित्या इक्ष्वाकवः सर्वे नित्यारघु कुलोद्भवाः । नित्यो हं मुनयो नित्याः नित्याः सर्वे च मंत्रिणः। अयोध्या वासिनो नित्या ब्राह्मण

मुप्र खास्तथा । नित्यामृ गश्च दास्यश्च श्री राजकुञ सेवकाः । कौशल्या श्री मती नित्या नित्यो दशरथो नृपः । कैकेयी च सुमित्राद्या नित्या श्री राज योषितः। श्री रामो लक्ष्मणश्चैव शत्रुघ्नो भरतस्तथा ॥ नित्या रघुकुलोद्भूता नित्यास्सर्वे कुमारकाः । नित्यं दशरथस्यांके स्थितस्य परमात्मनः ॥

अर्थात् भरद्वाज जी से वशिष्ठजी कहते हैं कि इक्ष्वाकु बंशी सब नित्य हैं रघुकुल में जितने उत्पन्न हुए हैं सो सब नित्य हैं मैं भी नित्य हूं वामदेवादिक मुनि भी सब नित्य हैं और धृष्टि जयन्तादि आठो मंत्री सब नित्य हैं अयोध्या बासी सब नित्य हैं तथा श्रेष्ठ ब्राह्मणादिक सब नित्य हैं और जितने रघुबंशी के सेवक दास दासी हैं सो सब नित्य हैं। श्री मती कौशल्या, श्री दशरथ जी, कैकेयी, और सुमित्रादिक सात सौ रानी हैं सो सब नित्य हैं। श्री राम, लक्ष्मण, शत्रुघ्न तथा श्री भरत जी सब नित्य रघुकुल में उत्पन्न हैं। और सब कुमार नित्य हैं श्री दशरथजी के अंक (गोद) में नित्य परमात्मा श्री राम जी स्थित हैं। इत्यादि बहुत कहा है इससे श्री राम जी नित्य हैं। इसी से परधाम यात्रा के समय शरीर समेत

चारो भाई सान्तानिक लोक को चले गये हैं और जैसा यहां पर विश्वम्भर उपनिषद में सगुण निर्गुण दोनों को श्री राम जी का शरीर कहा है उसी प्रकार से महर्षीजी ने उत्तर कांड में लिखा है यथा सर्ग १०८

यामिच्छसि महाबाहो तां तनुं प्रविशस्विकाम्।
वैष्णवीं तां महातेजा यद्वाऽऽकाशं सनातनम्॥
त्वंहि लोक गतिर्देव न त्वां केचित् प्रजानते।
ऋते मायां विशालाक्षीं तव पूर्वं परिग्रहाम्॥

अर्थात्–ब्रह्माजी बोले कि हे महा बाहो आपके दो शरीर हैं एक तो वैष्णवी यानी विष्णु संबंधी दिव्य मंगल विग्रह श्रीमन्नारायण, दूसरा सनातन आकाश अर्थात् "सपर्य्यगाच्छु क्रमकायम्" इस श्रुति के कथनानुसार आकाशवत् सर्व व्यापी निर्गुण ब्रह्म, सोहे महा तेजस्वी चाहे विष्णु संबंधी दिव्य मंगल विग्रह रूप शरीर में अथवा आकाशवत् सर्व व्यापी निर्गुण ब्रह्म रूप शरीर में प्रवेश कीजिये। अर्थात् जिसको चाहते हैं उस शरीर को स्वीकार कीजिये। यहाँ पर यदि ब्रह्मा जी से श्री रामजी कहें कि सगुण निर्गुण दोनों तो हमारे शरीर ही हैं तो हम कौन हैं उस पर ब्रह्मा जी कहते हैं कि हे देव आपही सब लोकोंकी गति हैं एक आपकी माया (ज्ञान रूपा) अथवा (कृपा रूपा) पूर्व परिगृहीत विशालाक्षी श्रीजानकी जी को छोड़ कर आपको कोई नहीं जानता है।

इससे सगुण निगुण दोनों के आत्मा श्रीराम जी हैं । यदि कोई कहे कि श्रीमन्नारायाण श्रीराम जी के शरीर हैं ऐसा कहां लिखा है तो यह बात अथर्वण वेदोक्त श्री राम तापनीयोपनिषद् में लिखा है। यथाः—

वायुपुत्रं विघ्नेशं वाणीं दुर्गां क्षेत्रपालकं सूर्य्यं चन्द्रं नारायणं नरसिंहं वासुदेवं वराहं तत्सर्व्वान् समात्रान् सीता लक्ष्मणं शत्रुघ्नं भरतं विभीषणं सुग्रीव मंगदं जाम्बवन्तं प्रणव मेतानि रामस्यांगानि जानीयाः ।

इत्यादि कहा है इससे सगुण निर्गुण दोनों श्रीरामजी के शरीर हैं फिर महर्षि जीने अयोध्या कांडके सर्ग ४४ में कहा है यथा–सूर्य्य स्यापि वेत्सूर्य्योह्यग्ने रग्निः प्रभोः प्रभुः । श्रियाश्रीश्चभवेदग्रया कीर्त्याः कीर्तिः क्षमा क्षमा ॥ दैवतं देवता नां च भूतानां भूत सत्तमः । इत्यादि ईश्वरों के ईश्वर श्रीरामजी को कहा है इस श्लोक की व्याख्या ऊपर कर आये हैं फिर भी उत्तर कारड के १०५ सर्ग में कहा है यथा–

ततस्त्वमसिदुर्धर्षात्तस्माद्भावात्सनातनात् ।
रक्षांविधास्यन् भूतानां विष्णुत्वमुपजग्मिवान् ॥

अर्थात् काल बोले की हे रामजी ! आप उस दुर्धर्षसना-

तन भाव से अर्थात् सबके आदि कारण सनातन पर ब्रह्म श्रीराम रूप जोकि "सूर्य स्यापिभवेत्सूर्यो ह्यग्ने रग्निः प्रभोः प्रभुः" इत्यादि प्रमाणों से सूर्य का भी सूर्य अग्नि की अग्नि ईश्वर का ईश्वर आप अ र जीवों की रक्षा निमित्त विष्णु हुए। ऐसा कहा है इससे श्रीरामजी से विष्णु का होना सिद्ध है। ऐसही "भवान्नारायणोदेवः" यहां पर भी श्रीरामजी को विशेष्य कहा है और श्रीमन्नारायण को विशेषण कहा है। इससे श्रीरामजी का परत्व श्रीवाल्मीकि जी ने बहुत लिखा है केवल उपासक जन जानते हैं। और महर्षि जी ने जो श्रीरामजी को नारायण विष्णु आदि कहा है सो तो परत्व छिपाने के लिये, दूसरे अखिलांश होने से श्रीरामजी को विष्णु नारायणादि कहने में कोई हानि नहीं है क्योंकि सब नाम ईश्वर ही के हैं केवल लक्ष को देखना चाहिये सो तो नराकार सनातन श्रीराम रूप ही पर है दूसरे पर नहीं फिर। "वाल्मीकि स्तुलसी दासः कलौ देवि भविष्यति। इस श्रीवशिष्ठ संहिता के प्रमाण से और "कलि कुटिल जीव निस्तार हित बाल्मीक तुलसी भये।" इस श्री भक्त मालके प्रमाण से श्रीवाल्मीकि जी के अवतार श्रीगोस्वामी जी का सिद्धांत क्या है सो भी सुनिये।

सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई॥ शंभु विरंचि विश्नु भगवाना। उपजहिं जासु अंश ते नाना॥ वाम भाग सोभति अनुकूला। आदि शक्ति छवि निधि

जगमूला ॥ जासु अंस उपजहिं गुनखानी । अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी ॥ सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू । विधि हरिहर बंदित पदरेनू ॥ हरिहिन्न सहित राम जब जोहे । रमा समेत रमा पति मोहे ॥ अगम सनेह भरत रघुबर के । जहँ न जाइ मन विधि हरिहर के ॥ जाके बल विरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दस सीसा ॥ शंकर सहस विश्नु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोहि ॥ उत्तर कांडे–जै सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने । यहाँ पर सगुन निर्गुन रूप से श्रीराम रूप को अनूप कहा है फिर गीतावली में कहा है ।यथा:—

जासु गुन रूप निःकलित निर्गुन सगुन संभु सनकादि सुक भक्ति दृढ़ कर गही । अर्थात् जिस रामजी के गुण और रूप से निर्गुण सगुण दोनों ब्रह्म निःकलित नाम अतिशय रचित हैं। इसीसे शंभु, सनकादिक और शुकदेव जीने श्रीराम जी को सर्वोपरिजान कर भक्ति को दृढ़ करके धारण किया है। फिर हरि हरहि हरिता विधिहि विधिता श्रियहि श्रियता जेहिं दई। सो जानकी पति मधुर मूरति मोद मय मंगल मई॥ अर्थात् विष्णु शिव कोपालन संहार की शक्ति और ब्रह्मा को उत्पत्ति रूप शक्ति और लक्ष्मी को ऐश्वर्यादि देने की शक्ति जिन्होंने दी है वह श्री जानकी पति श्रीराम अत्यंत मधुर (सुन्दर) कैसे हैं कि आनन्द मंगल मय हैं। फिर उत्तर कांड में देखिये। यथा:—

राम काम सत कोटि सुभग तन। दुरगा कोटि अमित अरि मर्दन॥ सक्र कोटि सत सरिस विलासा। नभ सत अमित कोटि अवकासा॥ मरुत कोटि सत विपुलबल रवि सत कोटि प्रकास। ससि सतकोटि सुसीतल समन सकल भव त्रास॥ काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत। धूमकेतुसत कोटि सम दुराधर्ष भगवंत॥ प्रभु अगाध सत कोटि पताला। समन कोटिसत सरिस कराला॥ तीरथ अमित कोटि सत पावन। नाम अखिल अघपूँग नसावन॥ हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा। सिंधु कोटि सत सम गंभीरा॥ काम धेनु सत कोटि समाना। सकल काम दायक भगवाना॥ सारद कोटि अमित चतुराई। विधि सत कोटि सृष्टि निपुनाई॥ विश्नु कोटि सत पालन करता। रुद्र कोटि सत सम संहरता॥ धनद कोटि सत सम धनवाना। माया कोटि प्रपञ्च निधाना॥ भार धरन सत कोटि अहीसा। निरबधि निरूपम प्रभु जगदीसा॥ निरूपम न उपमा आन राम समान राम निगम कहै। जिमि कोटि सत खद्योत सम रबि कहत अति लघुता लहै॥ इत्यादि अद्भुत ऐश्वर्य कहा है। इससे श्री रामजी के समान श्रीराम ही हैं ऐसा वेद कहता है दूसरी उपमा नहीं है यदि मूर्खता से विष्णु नारायणादि अन्य रूपों के समान श्री रामजी को कहे तो अति लघुता है। जैसे असंख्य कोटि जुगुनू के समान सूर्य्य को कहना अति लघुता है ऐसे ही नाम के विषय में श्री नारदजी ने कहा है यथा आरण्य काण्डे—राका रजनी भगति तव, राम नाम सोइ सोम। अ० १८

नाम उड़गन विमल, बसहु भक्त उर व्योम ॥ फिर "प्रेम रामायणे" श्लोक–

असंख्य कोटि नामानि नैव साम्यं प्रयांति च ।
खद्योत राशयो यान्ति रविः साहृश्यतां कथम् ॥

अर्थात्–भगवत् के असंख्य कोटि नाम श्री रामनाम के समान नहीं हो सकते हैं जैसे असंख्य कोटि जुगनू रवि के समान कैसे हो सकते हैं। इत्यादि, कहा है । फिर सती के प्रकरण में लिखा है। यथा, देखे शिवविधि विष्णु अनेका । अमित प्रभाउ एक ते एका ॥ वंदत चरन करत प्रभु सेवा । विविधि वेष देखे तहँ देवा ॥ अर्थात् सहस्रों ब्रह्मा विष्णु महादेव श्री रामजी की सेवा करते हैं जैसा कि विश्वम्भर उपनिषद् में लिखा है इसलिये यह सब ग्रन्थ वेदानुकूल ही हैं। ऐसे ही सदा शिव संहिता में लिखा है। यथाः—

भानु कोटि प्रतीकाशं चन्द्र कोटि प्रमोदकम् ।
इन्द्रकोटि सदा मोदं वसु कोटि वसु प्रदम् ॥
विष्णु कोटि प्रतीपालं ब्रह्म कोटि निसर्जनम् ।
रुद्र कोटि प्रमर्दं वै मातृ कोटि विनाशनम् ॥
भैरव कोटि संहारं मृत्यु कोटि विभ्भ्क्षणम् ।
यम कोटि दुराधर्षं काल कोटि प्रधावकम ॥

गंधर्व कोटि संगीतं गण कोटि गणेश्वरम् ।
काम कोटि कला नाथं दुर्गा कोटि विमोहनम् ॥
सर्व सौभाग्य निलयं सर्वा नन्दैक दायकम् ।
कौशल्या नन्दनं रामं केवलं भव खण्डनम् ॥

अर्थात्—कोटि सूर्य्य के समान प्रकाश, कोटि चन्द्रमा के समान आनन्द, कोटि इन्द्र के समान सदा आनन्द, कोटि वसु के समान वसु (द्रव्य) के देनेवाले, कोटि विष्णु के समान पालन कर्ता, कोटि ब्रह्मा के समान सृष्टि कर्ता, कोटि शिव के समान संहार कर्ता, कोटि मातृगण के समान नाश कर्ता, कोटि भैरव के समान संहार कर्ता कोटि मृत्यु के समान सबको भक्षण करने वाले, कोटि यम के समान कठिन कोटि काल के समान दौड़नेवाले, कोटि गंधर्व के समान गाने वाले, कोटि गण के समान गणेश्वर, (गणेश) कोटि काम के समान कला नाथ कोटि दुर्गा के समान सबको मोहनेवाले। सर्व सौभाग्य के स्थान, सब आनन्द के देने वाले, कौशल्यानन्दन श्री राम केवल जन्म मरण के खण्डन करने वाले हैं। पुनः शिव संहितायां पञ्चम पटले द्वितीय अध्याये-श्रीशिवउवाच ।

आसीनंत मयोध्यायां सहस्रस्तंभ मण्डिते ।
मण्डपे रत्न संज्ञे च जानक्या सह राघवम् ॥
मत्स्य कूर्म्म किर्य्यनेको नारसिंहोप्यनेकधा ।

बैकुण्ठोपि हयग्रीवो हरिः केशव वामनौ ॥
यज्ञो नारायणो धर्म्म पुत्रो नर वरोपि च ।
देवकी नन्दनः कृष्णो वासुदेवो वलोपि च ॥
पृश्नि गर्भो मधून्माथी गोविन्दो माधवोपि च ।
वासुदेवो परानन्तः सङ्कर्षणा इरापतिः ॥
प्रद्युम्नोप्यनि रुद्धश्च व्यूहा स्सर्वेपि सर्वदा ।
रामं सदोपतिष्ठंते रामादेशे व्यवस्थिताः ॥
एतेरन्यैश्च संसेव्यो रामो नाम महेश्वरः ।
तेषामैश्वर्य्य दातृत्वात्तन्मूल त्वान्निरीश्वरः ॥

अर्थात् श्री अयोध्याजी में सहस्रों खम्भ करके शोभित रत्न मण्डप में श्री जानकीजी के सहित श्री रामजी को वैठे हुए। नरसिंह, बैकुण्ठ भगवान्, हयग्रीव हरि भगवान्, केशव, वामन, यज्ञ नारायण, धर्म्मपुत्र नर, और देवकी नन्दन श्री कृष्ण, वासुदेव, बलदेव पृश्नि गर्भ, मधुसूदन, गोविन्द, माधव और पर वासुदेव अनन्त, संकर्षण, लक्ष्मीपति, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, ये सब चतुर्व्यूह सर्वदा श्री रामजी के सामने हाथ जोड़े खड़े रहते हैं। जिनको जो आज्ञा होती है सो सब कार्य्य करते हैं। ये सब जो पूर्व कह आये हैं और अन्य सब श्री राम नाम महा ईश्वर की सेवा करते हैं अर्थात् राम नाम

जपते हैं। पूर्व्वोक्त सबको ऐश्वर्य देने से और सब के आदि कारण होने से श्री रामजी अनादि ब्रह्म हैं श्री रामजी निरीश्वर हैं भाव श्री रामजी का ईश्वर कोई नहीं है, सर्व तन्त्र स्वतन्त्र हैं " निज तन्त्र नित रघुकुल मनी " पुनः जेहि समान अतिसय नहिं कोई। ताकर सील कसन अस होई॥ इत्यादि कहा है पुनः—

इन्द्र नामा स इन्द्राणां पतिस्साक्षी गतिप्रभुः।
विष्णुः स्वयं स विष्णू नां पतिर्वेदांत कृद्विभुः॥
ब्रह्मा स ब्रह्मणां कर्ता प्रजापति पतिर्गतिः।
रुद्राणां स पतीरुद्रो रुद्र कोटि नियामकः॥
चन्द्रादित्य सहस्राणि रुद्र कोटि शतानि च।
अवतार सहस्राणि शक्तिकोटि शतानि च।
इन्द्रकोटि सहस्राणि विष्णु कोटिशतानि च॥
ब्रह्म कोटि सहस्राणि दुर्गाकोटि शतानि च।
महाभैरव कल्याणी कोटचतुर्द शतानि च॥
गंधर्वाणां सहस्राणि देवकोटि शतानि च।
वेदाः पुराण शास्त्राणि तीर्थ कोटि शताति च॥
देव ब्रह्म महर्षीणां कोटि कोटि शतानि च॥

अर्थात् वह श्री रामजी इन्द्र नामसे सब इन्द्रों के पति साक्षी गति और प्रभु हैं वह श्री रामजी स्वयंविष्णु रूपसे सबविष्णु के पति हैं वेदांत शास्त्र के कर्ता समर्थ हैं वह श्री राम जी स्वयं ब्रह्मा रूप सब ब्रह्मा के कर्ता हैं प्रजा पतियों के पति हैं वह श्री रामजी स्वयं रुद्ररूप से सब रुद्रों के पति और कोटि रुद्रों के नियामक हैं। सहस्रों चन्द्र, सूर्य्य, सैकड़ों "कोटि रुद्रके समान हैं" सहस्रों अवतार और सौकोटि शक्ति के समान हैं सहस्रों कोटि इन्द्र और सौ कोटि विष्णु के समान हैं सहस्रों कोटि ब्रह्मा और सौ कोटि दुर्गा के समान हैं। शिव जी बोले कि हे कल्याणी सौ कोटि अर्बुद महाभैरव के समान हैं सहस्रों गन्धर्व करोड़ों देवता के समान वेद पुराण शास्त्र सौ कोटि तीर्थ के समान पवित्र हैं देवर्षि ब्रह्म ऋषियों के सौ कोटि के समान मंत्रार्थ प्रति पादन करने में श्री रामजी विद्वान् हैं इत्यादि बहुत कहा है, जो सिद्धांत विश्वंभर उपनिषद् में लिखा है वही सिद्धांत सब संहितादिकों के हैं वही सिद्धांत श्री गोस्वामीजी का भी है वही सिद्धांत श्री कबीर दास जी काभी है। यथाः—सब अवतार जासु महिमंडल अनंत खड़ो कर जोरे। अद्भुत अगम अथाह रचो है ईसब सोमा तोरे॥ जहँ कोटि विस्नु नावै सुमाथ जहँ कोटि ब्रह्मा पढ़ैं पुरान। जहँ कोटि महादेव धरैं ध्यान। जहाँ कोटि सरस्वति करैं गान। जहाँ कोटि इन्द्र गावने लाग जहँ गनगंधर्व मुनि गनि न जाहिं॥ इत्यादि बहुत कहा है इससे "सकल सयाने एक मत" किसी ने कहा है सो ठीकही है जिन सज्जनों को विशेष

देखना हो तो उपासना त्रय सिद्धांत, श्री राम मंत्र परम वैदिक सिद्धांत और वेदार्थ प्रकाश रामायण को अवश्य देखें। श्री रामजी परात्पर ब्रह्म हैं इसमें कोई सन्देह नहीं है जो श्री रामजी को न्यून दृष्टि से देखते हैं सो महा अधम हैं उनका मुख देखना न चाहिये। यथाः—शिवसंहितायाम्।

येषां रामः प्रियो नैव रामे न्यूनत्वदर्शिनाम्।
द्रष्टव्यं न मुखं तेषां संगतिस्तु कुतस्तराम् ॥

अर्थात् श्री शिवजी कहते हैं कि जिनको श्री राम जी प्रिय नहीं हैं उनके और जो श्री रामजी में न्यूनता देखने वाले हैं उनके मुख को नहीं देखना चाहिये संगति करना तो कहाँ से हो सकता है इस अपूर्व सिद्धांत को न समझना अथवा न मानना अपनी रुचि है क्योंकि लिखा है कि,

महादेव अवगुन भवन, विश्नु सकल गुन धाम।
जेहि के मनरम जाहि सन, तेहि तेही सन काम ॥

इत्यलम्।



श्री रामानुजीय वैष्णवों की अकथ कहानी।

श्री रामानुजीय वैष्णव कहते हैं कि हमारे पूर्वाचार्य्यों को श्री रामानन्दीय वैष्णाव श्री राम कृष्णादि मंत्रों के घोर निन्दक कहते हैं। सो हमारे पूर्व्वाचार्य्य निन्दक नहीं हैं। उसका तात्पर्य्य दूसरा है। दूसरे अपने इष्ट मंत्रों की पुष्टी करने के लिये कहा है इससे निन्दा समझना भूल है। यदि अपने मंत्रों की पुष्टी करने के लिये कहने से अन्य मंत्रों की घोर निन्दा समझी जावे तो "शंभु विरंचि विश्नु भगवाना। उपजहिं जासु अंस ते नाना॥ विधि हरि हर वन्दित पदरेनू। जासु अंस उपजहिं गुन खानी। अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी॥ उमा रमा ब्रह्मानि वन्दिता॥ कोटि विश्नु सम पालन कर्ता"॥ इत्यादि रामायण में श्री गोस्वामी तुलसी दास जी ने बहुत कहा है। और भी अपने उपासना के ग्रंथों में सहस्रों विष्णु नरायणादि को श्रीरामजी के अंश से होना लिखा है। तो इससे भी विष्णु नारायणादि रूपों की निन्दा सिद्ध होती है। फिर हमारेही पूर्वाचार्यों को निन्दक क्यों बनाते हैं? आप सब भी तो निन्दक हुए। तो यह कहना ठीक नहीं है। क्यों-कि निन्दा का अर्थ है कुत्सित शब्दों का प्रयोग करना, जैसा कि चिन्तामणि को पत्थल कहना कल्प वृक्ष को रेंड कहना इत्यादि। जैसा कि आप के रहस्य ग्रंथों में व्यापक परब्रह्म श्रीरामकृष्णादि को क्षुद्र देवता कहा है उनके मन्त्र अव्या-पक हैं क्षुद्र फल के देने वाले हैं। अशिष्ट परिग्रह

हैं। मोक्ष देने की शक्ति नहीं है। अपराधी हैं। पशु तुल्य हैं। अयोध्या वासियों की गति न हुई। रामजी कुरेश का अवतार धारण कर फिर नारायण मंत्र लेकर अयोध्या वासियों को परमपद दिया। श्रीराम कृष्णादि मंत्रों के उपदेष्टा आचार्य्य नहीं हो सकते हैं। श्रीराम कृष्णादि के मंत्र समस्त कल्याण गुणों से रहित हैं। कुब्जा की गति न हुई फिर जन्म लेकर बेश्या होनी पड़ी। शूर्पणखा राक्षसी श्रीराधिका जी हुई इत्यादि अनेक कपोल कल्पित शास्त्र विरुद्ध बातें लिखी हैं। इसका नाम निन्दा है। यदि यह सब बात शास्त्रानुकूल कहते त निन्दा नहीं कही जाती। यदि कहते भी तो ऋषि, मुनी ही को कहते। आप के पूर्वाचार्य्यों को नहीं कहते। जैसा आपके रहस्य ग्रन्थों में हमारे इष्ट मंन्त्रों की घोर निन्दा लिखी है। वैसही हमारे रहस्य ग्रन्थों में आपने इष्ट मंत्रों की निन्दा कहीं भी बता दें तो हम निन्दक हो सकते हैं। नहीं तो मुख आपके पास है जी चाहै सो कहिए। और श्रीराम कृष्णादि के अंश से विष्णु नारायणादि को होना तो बहुत लिखा है। इससे इसको निन्दा कहना उचित नहीं। क्यों कि "दीपा दुत्पन्न दीपवत्" इस प्रमाण से ईश्वर के एक रूप से अनन्त रूप होना शास्त्र सम्मत है। यदि इसको निंदा मानेंगे तो वृद्ध हारीत स्मृति में लिखा है। नाम्नां विष्णोः सहस्राणां तुल्य एव महामनुः अनंता भगवन्मंत्रा नानेनतु समाः कृताः॥ पुनः अगस्त्य संहितायाम्। वैष्णवे ष्वपि सर्व्वेषु राममंत्राः फला धिकाः। गाणपत्यादि मंत्रेषु कोटि कोटि गुणाधिकाः पुनः ऐसा

ही राम तापनी योपनिषद में लिखा है ॥ पुनः पद्म पुराणे उत्तर खराडे । सहस्र नाम सदृशं विष्णोर्नारायणस्य च । षड-क्षर महामंत्रं रघूणां नायकस्य च ॥ पुनः क्रिया खराडे विष्णोर्नामानि विप्रेन्द्र सर्व वेदाधिका मता । तेषां मध्येतु तत्वज्ञैः राम नाम परं स्मृतम् ॥ पुनः विष्णु पुराणे ॥ श्री रामेति परं नाम रामस्यैव सनातनम् । सहस्र नाम सदृशं विष्णोर्नारायणस्य च ॥ पुनः। सहस्र नाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने ॥ पुनः वृहद्ब्रह्म संहितायाम् । वासुदेवादि मूर्तीणां चतुर्णां कारणं परम् । चतुर्विंशति मूर्तीणामाश्रयः शरणं मम ॥ पुनः अ० ३१ । नानेन सदृशो मंत्रो मया दृष्टोहि कुत्रचित् । शैव वैष्णव सौरेषु गानपत्येषु वा मुने ॥ पुनः राम रहस्योपनिषद् खराड १ पूनारायणाष्टाक्षरे च शिव पंचाक्षरे तथा । सार्थ कार्णं द्वयं रामो रमन्ते यत्र योगिनः ॥ पुनः श्री राम तापनीये । विघ्नेशं वाणीं दुर्गाम् क्षेत्र पालकं सूर्य्यं चन्द्रं नारायणं नृसिंहं वासुदेवं एतानि रामस्यांगानि जानीयाः । इत्यादि पुनः स्कन्द पुराण उत्तर खंड अ० २ राम ध्यान पराणांच कः समर्थः प्रबाधितुम् राम भक्ति परायत्र ब्रह्मा विष्णुः सदाशिवः ॥ पुनस्तत्रैव अ० ३। ब्रह्म विष्णु महेशाद्या यस्यांशा लोक साधकाः । तमादि देवं श्री रामं विशुद्धं परमं भजे ॥ पुनः ब्रह्मवैवर्त पुराण उत्तरार्द्ध श्रीजन्म खराड अ० ६२ अप्राप्य रामं दुष्प्रापं करोषि दुष्करं तपः। ब्रह्मविष्णु शिवादी नामीश्वरं प्रकृतेः परम् ॥ इत्यादि प्रामाणिक ग्रंथों में बहुत कहा है । इससे भी निन्दा सिद्ध हो जायगी । फिर ऐसही श्रीमद्भागवतादि में कहा है । एतन्नानाऽवताराणां

निधानं वीजमव्ययम्। एते चांश कला पुंसः कृष्णस्तु भगवान्स्वयम् ॥ इससे भी और स्वरूपों की निन्दा हो जायगी। फिर देखिये आपके त्रिपाद् विभूति महा नारायणोपनिषद् में मोक्ष मार्ग वर्णन करते हुए मार्ग में उत्तरोत्तर अनंत वैकुण्ठ अनंत विष्णु नारायणादि के स्वरूप बर्णन किये हैं सो सब पर नारायण के अंश हैं। यथा। चतुर्मुख पंचमुख षण्मुख सप्तमुखाष्ट मुखादि संख्या क्रमेण सहस्रावधि मुखांतै नारायणांशै रजोगुण प्रधानैरेकैक सृष्टि कर्तृभि रधिष्ठितानि विष्णु नारायणाख्यै नारायणांशैःसत्व तमोगुण प्रधानैरेकैक स्थिति संहार कर्तृ भिरधिष्ठितानि इत्यादि कहा है और एक अविद्या पाद में अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड है उस एक एक ब्रह्माण्ड में अनन्त लोक अनन्त बैकुण्ठ है यथा। एकस्मिन्न विद्या पादेऽनन्त कोटि ब्रह्माण्डानि सावरणानि श्रुयन्ते। तस्मिन्ने कस्मिन्नण्डे बहवो लोकाश्च बहवो बैकुण्ठाश्चानन्तविभूतयश्च सन्त्येव। इत्यादि कहा है तब इससे भी अनन्त बैकुण्ठ अनन्त विष्णु नारायणादि रूपान्तरों की निन्दा हो गई। नहीं नहीं सो नहीं हो सकती है। शास्त्रोक्त सिद्धांत अपने इष्ट मंत्रानुकूल कहना सब ठीक है। सोई सिद्धान्त हम सबों के हैं और यह जो कहते हैं कि हमारे पूर्वा चार्य्यों ने निन्दा नहीं की है। उसका तात्पर्य्य दूसरा है। सो तो श्री अनन्ताचर्य्यजी ने अपने तत्वो द्योधन में भलीभाँति से मशाला मिर्ची मिलाकर लिखा है। यही तात्पर्य्य है कि दूसरा जिसका खण्डन "तत्वोद्योधन मी

मांसा में किया है । आज तक उत्तर न हुआ बस यही तात्पर्य है । घर में परदा लगाकर चाहे जो बकिये बाहर में बकना कठिन है । क्योंकि अब तो सबको ईश्वर कृपा से विद्यारूपी नेत्र हो गया है । वह दिन गया विशेष बढ़ने से हानि होगी लाभ नहीं । इत्यलम्–

